



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 38]

नई दिल्ली, मंगलवार, जनवरी 27, 2009/माघ 7, 1930

No. 38]

NEW DELHI, TUESDAY, JANUARY 27, 2009/MAGHA 7, 1930

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 23 जनवरी, 2009

प्रारम्भिक जांच परिणाम

विषय: चीन जन.गण., थाइलैंड और वियतनाम के मूल के अथवा वहां से निर्यातित पोलिएस्टर के सभी पूर्णतः ड्रॉन या पूर्णतः ओरिएन्टेड यार्न/स्पिन ड्रॉ यार्न/प्लैट यार्न (नॉन टेक्सचर्ड और नॉन-पीओवाई) और अन्य यार्नों के आयात से सम्बन्धित पाटनरोधी जांच।

सं. 14/3/2008-डीजीएडी.—वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क आकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे एतदपश्चात् पाटनरोधी नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए।

क. पृष्ठभूमि तथा प्रक्रिया

2. (i) उपर्युक्त नियमावली के अंतर्गत निर्दिष्ट प्राधिकारी को घरेलू उद्योग की ओर से एसोसिएशन ऑफ सिंथेटिक फाइबर इंडस्ट्री द्वारा दायर एक आवेदन प्राप्त हुआ है जिसमें चीन जन.गण., थाइलैंड और वियतनाम (जिन्हें एतदपश्चात् सम्बद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित पोलिएस्टर के सभी पूर्णतः ड्रॉन या पूर्णतः ओरिएन्टेड यार्न/स्पिन ड्रॉ यार्न/प्लैट यार्न (नॉन टेक्सचर्ड और नॉन-पीओवाई) और अन्य यार्नों (जिन्हें एतदपश्चात् सम्बद्ध वस्तु कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाया गया है।

(ii) प्राधिकारी ने आवेदक द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के आधार पर चीन जन.गण., थाइलैंड और वियतनाम के मूल की/या वहां से निर्यातित सम्बद्ध वस्तु के आयातों से सम्बन्धित जांच की शुरुआत करना उचित समझा है। प्राधिकारी ने नियमावली के उप-नियम 5(5) के अनुसार इस जांच की शुरुआत करने से पहले पाटन के आरोप की प्राप्ति के बारे में नई दिल्ली में स्थित सम्बद्ध देशों के दूतावासों को सूचित किया।

- iii) प्राधिकारी ने भारत के राजपत्र, असाधारण में दिनांक 6.5.2008 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की थी जिसमें संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की अनुसूची-1 के अध्याय-54 के अंतर्गत वर्गीकृत संबद्ध वस्तुओं के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच की शुरुआत की गई थी ।
- iv) प्राधिकारी ने इस सार्वजनिक सूचना की एक प्रति ज्ञात निर्यातकों (जिनके नाम और पते प्राधिकारी के पास उपलब्ध थे) को भेजी थी और नियम 6(2) के अनुसार इस पत्र की तारीख से चालीस दिनों के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अवसर उन्हें दिया था ।
- v) प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध वस्तु के सभी ज्ञात आयातकों (जिनके नाम और पते प्राधिकारी के पास उपलब्ध थे) को सार्वजनिक सूचना की एक प्रति भेजी थी और नियम 6(2) के अनुसार इस पत्र को जारी करने की तारीख से 40 दिनों के भीतर उनके विचारों से अवगत कराने की सलाह उन्हें दी थी ।
- vi) वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी महानिदेशक (डीजीसीआईएंडएस), कोलकाता से जांच अवधि और उसके पहले तीन वर्षों के लिए भारत में किए गए संबद्ध वस्तु के आयातों के ब्यौरों की व्यवस्था करने का अनुरोध किया गया था । तथापि, सीमाशुल्क शीर्ष 54.02 के अंतर्गत सौदा-वार ब्यौरे डीजीसीआईएस के पास उपलब्ध नहीं थे ।
- vii) प्राधिकारी ने संबंधित नियम 6(3) के अनुसार ज्ञात निर्यातकों और संबद्ध देशों के दूतावासों को आवेदन के अगोपनीय अंश की प्रतियां उपलब्ध कराई थीं । अगोपनीय आवेदन की एक प्रति अन्य हितबद्ध पक्षकारों को भी अनुरोध करने पर उपलब्ध कराई गई थी ।
- viii) प्राधिकारी ने नियम 6(4) के अनुसार ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों से संगत सूचना मंगाने के लिए एक प्रश्नावली भेजी थी ।
- ix) अन्य निर्यातकों, उत्पादकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों, जिन्होंने इस जांच के संबंध में सूचना उपलब्ध नहीं कराई है, को असहयोगी हितबद्ध पक्षकार माना गया है ।
- x) बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी व्यवहार (एमईटी) प्रश्नावली सभी ज्ञात निर्यातकों और चीन जन.गण. तथा वियतनाम के दूतावासों को भेजी गई थी । यद्यपि, जांच शुरुआत के प्रयोजनार्थ चीन जन.गण. और वियतनाम में सामान्य मूल्य को चीन जन.गण. और वियतनाम में संबद्ध वस्तु की परिकल्पित उत्पादन लागत के आधार पर माना गया था, तथापि प्राधिकारी ने ज्ञात निर्यातकों को सूचित किया था कि वह यथासंशोधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 और पैरा 8 के आलोक में आवेदक के दावे की जांच करने का प्रस्ताव करते हैं । चीन जन.गण. और वियतनाम से संबद्ध

वस्तु के निर्यातकों/उत्पादकों से इसलिए पैराग्राफ 8 के उप-पैराग्राफ (3) में यथा उल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था ताकि प्राधिकारी इस बात पर विचार करने में सक्षम हो सकें कि क्या सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों को बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार प्रदान किया जाए ।

- xi) इस जांच में सूचना प्रदान नहीं करने वाले आयातकों/प्रयोक्ताओं को असहयोगी हितबद्ध पक्षकार माना गया है ।
- xiii) आवेदक और अन्य घरेलू उत्पादकों से भी क्षति के संबंध में सूचना मांगी गई थी ।
- xvi) प्राधिकारी ने नियम 6(7) के अनुसार विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय अंश प्राधिकारी द्वारा रखी गई एक सार्वजनिक फाइल के रूप में हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण हेतु खुला रखा था ।
- xvii) लागत संबंधी जांच सामान्यतः स्वीकृत लेखांकन सिद्धांतों (जीएएपी) और आवेदक द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तु की इष्टतम उत्पादन लागत और उसे बनाने और बेचने में आने वाली लागत ज्ञात करने के लिए की गई थी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा ।
- xviii) वर्ष 2001 की सिविल अपील सं.1294 में उच्चतम न्यायालय के निर्णय के अनुपालन में संबद्ध देशों के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण किया गया है ।
- xix) इस अधिसूचना में *** चिन्ह हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई और नियमावली के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा गोपनीय मानी गई सूचना को प्रदर्शित करता है ।
- xx) यह जांच एक सितंबर, 2006 से शुरू होकर 30 अक्टूबर, 2007 (12 महीने) की अवधि अर्थात् जांच अवधि (पीओआई) के लिए की गई थी । क्षति संबंधी विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्तियों की जांच में अप्रैल, 2004-मार्च, 2005, अप्रैल, 2005-मार्च, 2006, अप्रैल, 2006-मार्च, 2007 की अवधि और जांच अवधि शामिल है ।

ख. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

3. पोलिएस्टर के सभी पूर्णतः ड्रॉन या पूर्णतः ओरिएन्टेड यार्न/स्पिन ड्रॉन यार्न/प्लैट यार्न (नॉन टेक्सचर्ड और नॉन-पीओवाई) और अन्य यार्न जो सीमाशुल्क शीर्ष 5402.47 के टैरिफ विवरण के अनुरूप हैं ।

4. इस उत्पाद को वाणिज्यिक बाजार शब्दावली में सामान्यतः "पूर्णतः ड्रॉन यार्न" कहा जाता है। संबद्ध वस्तु का प्रयोग परिधान/घरेलू वस्त्र, और अन्य औद्योगिक वस्त्रों के विनिर्माण में होता है।
5. संबद्ध वस्तु के तकनीकी विनिर्देशन उनके डेनियर्स, तन्यता, लस्टर्स, रंगों (जैसे सेमी डल, ब्राइट, सुपर ब्राइट, फुल डल, डोप डाइड), क्रॉस सेक्शन और सिकुड़ने की दृष्टि से परिभाषित किये जाते हैं।
6. संबद्ध वस्तुएं सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1995 के अध्याय 54 के अंतर्गत सीमाशुल्क उप शीर्ष 540247 के तहत वर्गीकृत हैं।
7. यह अनुरोध किया गया है कि संबद्ध वस्तुएं जिनका पाटन भारत में किया जा रहा है, घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुओं के समान हैं। पाटित आयातों और घरेलू रूप से उत्पादित संबद्ध वस्तुओं के बीच तकनीकी विनिर्देशनों, गुणवत्ता कार्यों और अंतिम उपयोगों की दृष्टि से कोई अंतर नहीं है। इस प्रकार घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुएं संबद्ध देशों से पाटित वस्तुओं के "समान वस्तु" हैं। पाटित वस्तुओं और आवेदकों द्वारा विनिर्मित विचाराधीन उत्पाद के बीच कोई अंतर नहीं है। ये दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं और इसलिए पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत इन्हें "समान वस्तुएं" माना जाना चाहिए।
8. मै. थाई पोलिएस्टर कंपनी लि. (टीपीसी) ने अनुरोध किया है कि टीपीसी ने मुख्यतः जांच अधि के दौरान भारत को कथित प्रीमियम ग्रेड के एफडीवाई या एसडीवाई (मोनो), 20 डेनियर, 1 फिलामेंट, सेमी डल लस्टर का निर्यात किया है। यह भी बताया गया है कि बड़े भारतीय घरेलू उत्पादकों ने घरेलू बाजार में केवल गैर-प्रीमियम एसडीवाई ग्रेडों का उत्पादन और बिक्री की है। यद्यपि, टीपीसी का निर्यात उत्पाद याचिका के अंतर्गत निर्धारित उप शीर्ष 5402-47-00 के अध्याय 54 के अंतर्गत मानव निर्मित फिलामेंट के रूप में वर्गीकृत है। तथापि, टीपीसी द्वारा बेचा गया उत्पाद वास्तव में उत्पाद की उस किस्म के समान नहीं है जिसे भारतीय घरेलू उद्योग, जिन्होंने क्षति होने का दावा किया है, द्वारा अधिकांशतः बेचा गया है। प्रीमियम ग्रेड के एफडीवाई का उत्पादन करने के लिए उत्पादक नव-प्रवर्तनकारी प्रीमियम ग्रेड के उत्पादन हेतु नई प्राद्योगिकी का प्रयोग करते हैं। जिसके परिणामस्वरूप प्रीमियम ग्रेड के एफडीवाई की कीमतें सामान्यतः विशिष्ट भारतीय बाजार में उत्पादित और बेचे जाने वाले लो ग्रेड की गुणवत्ता की वस्तु से अधिक होती हैं। चूंकि भारत में घरेलू उत्पादकों ने अब तक प्रीमियम ग्रेड के एफडीवाई का उत्पादन नहीं किया है इसलिए भारतीय बाजार में एसडीवाई (मोनो) की मांग उसकी आपूर्ति से अधिक है अतः एसडीवाई (मोनो) उत्पाद को थाइलैंड से निर्यातित संबद्ध वस्तु के रूप में ज्ञात रूप से वर्गीकृत नहीं किया जाना चाहिए जिससे इस जांच के अंतर्गत घरेलू उद्योग पर क्षतिकारी प्रभाव पड़ा है।
9. प्राधिकारी नोट करते हैं कि टीपीसी के वक्तव्य की बाद में किसी साक्ष्य द्वारा पुष्टि नहीं की गई है। अन्य सहयोगी निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने इस संबंध में कोई मुद्दा

नहीं उठाया है। अतः प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु को संबद्ध देशों से पाटित वस्तु के "समान वस्तु" माना है।

ग आवेदक की स्थिति और घरेलू उद्योग

10. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह आवेदन एसोसिएशन ऑफ सिन्थेटिक फाइबर इंडस्ट्री द्वारा घरेलू उद्योग की ओर से प्रस्तुत किया गया है। रिलायंस इंडस्ट्रीज लि., नोवा पेट्रोकेमिकल्स लि., गुप्ता सिन्थेटिक लि. और चिरीपाल पेट्रोकेमिकल्स लि. द्वारा आंकड़े प्रस्तुत किए गए हैं। यह आवेदन मै. सेन्चुरी एनका लि., मै. इंडोरामा सिन्थेटिक्स (आई) लि., मै. पारस पेट्रोफिल्स लि., मै. गॉर्डन सिल्क मिल्स लि., जेबीएफ इंडस्ट्रीज लि. और मै. वेलस्पन सिन्टैक्स लि. द्वारा समर्थित था। इन उत्पादकों का भारतीय उत्पादन में 85% हिस्सा बनता है और इस प्रकार इनके पास वांछित योग्यता है। आंकड़े उपलब्ध कराने वाली कंपनियों का कुल उत्पादन में 68% हिस्सा बनता है अतः ये नियम 2(ख) के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग हैं।

घ. गोपनीयता

11. प्रारंभिक जांच परिणामों में क्षमता, उत्पादन और बिक्रियों आदि से संबंधित घरेलू उद्योग के आंकड़े गोपनीय नहीं माने गए हैं। तथापि, उपभोक्ताओं, कीमतों और लागतों से संबंधित सूचना गोपनीय मानी गई है। अन्य हितबद्ध पक्षकार इस संबंध में अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत कर सकते हैं।

12. सहयोगी निर्यातकों के गोपनीयता संबंधी दावों की जांच की जा रही है। तथापि, प्रारंभिक जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ निर्यातकों द्वारा गोपनीय रूप से प्रस्तुत किए गए आंकड़ों को गोपनीय माना गया है। हितबद्ध पक्षकार निर्यातकों के दावे के संबंध में अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत कर सकते हैं।

ड अन्य मुद्दे

ड1 घरेलू उद्योग से पीसीएन-वार सूचना

13. जियांगसू हैंगली केमिकल्स फाइबर कंपनी लि. द्वारा यह तर्क दिया गया है कि पाटन के पीसीएन आधारित निर्धारण का तर्कसंगत आधार यह है कि विचाराधीन उत्पाद के ग्रेडों, गुणवत्ताओं और कीमतों की दृष्टि से उसकी श्रेणी के भीतर काफी विभिन्नताएं हैं। पीसीएन-वार लागत और कीमत संबंधी सूचना के अभाव में सामान्य मूल्य और निर्यात कीमतों का निर्धारण पूर्णतः विकृत हो जाएगा। उदाहरणार्थ यदि निर्यातक के मूलता के देश के बाजार में निर्यातक केवल कम से कम महंगे ग्रेडों/गुणवत्ताओं को बेच रहा था परंतु भारत को निर्यात उच्चतर गुणवत्ता/अधिक महंगे ग्रेडों के किए गए थे तो निर्दिष्ट प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए बाध्य होंगे कि कोई पाटन नहीं हुआ है। इसी प्रकार इस बात की पूरी

संभावना है कि घरेलू उद्योग को उन पीसीएन के संबंध में कोई क्षति न हुई हो जिनका निर्यात जियांसू हंगली या अन्य निर्यातकों द्वारा किया गया है। अतः घरेलू उद्योग और निर्यातकों, दोनों की ओर से संपूर्ण जांच पीसीएन-वार लागत और कीमत सूचना पर आधारित होनी चाहिए।

14. घरेलू उद्योग ने इस संबंध में बताया है कि निर्यातकों से पीसीएन वार सूचना पाटन मार्जिन के समुचित रूप से निर्धारण के लिए मंगाई जाती है। पीसीन वार विश्लेषण का आधार पाटनरोधी संबंधी डब्ल्यूटीओ करार के अनुच्छेद 2.4 से उत्पन्न होता है जो केवल पाटन मार्जिन संबंधी विश्लेषणों के लिए है। यह भी बताया गया है कि निर्यातक ने अपने अनुरोध में सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के लिए पीसीएन वार आंकड़ों की जरूरत को माना है। अतः पीसीएन वार विश्लेषण की संकल्पना को पाटन मार्जिन के अलावा किसी अन्य मुद्दे के विश्लेषण हेतु न तो स्वीकार किया जाता है और न ही इसकी परिकल्पना की जाती है। मॉडल वार या पीसीएन वार विश्लेषण की संकल्पना अनुच्छेद 2.4 के अंतर्गत पाटन मार्जिन के कानून तक सीमित है। इसी के साथ पाटनरोधी नियम के अनुबंध-II के पैराग्राफ (6) जिसमें इस बात की पुष्टि की गई है कि घरेलू उद्योग के विश्लेषण और क्षति संबंधी विश्लेषण की अपेक्षाएं अनुच्छेद 2.4 के अधिदेश (या पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-I के पैराग्राफ 6) से बिल्कुल अलग हैं। जहां तक लागत रिकॉर्डों के रखरखाव का संबंध है, यह निवेदन किया गया है कि कंपनियां वास्तव में अधिनियम के अंतर्गत यथाअपेक्षित लागत संबंधी रिकार्ड का रख-रखाव कर रही हैं। तथापि, घरेलू उद्योग के लिए पीसीएन स्तर पर लागत संबंधी रिकार्ड रखना न तो अपेक्षित है और न ही वह उन्हें रख रहा है।

15. प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति संबंधी विश्लेषण के लिए विधिक मापदंडों में समान वस्तु की विभिन्न किस्मों के संबंध में अलग-अलग सूचना अपेक्षित नहीं है। तथापि, पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए उत्पाद के भिन्न-भिन्न विनिर्देशनों की तुलना में अनुचित परिणाम प्राप्त होंगे, अतः तुलना पीसीएन-वार की जानी चाहिए। भारत में अपनाए जाने वाले अपेक्षाकृत कम शुल्क के नियम के अनुपालन में और इसके परिणामस्वरूप क्षति मार्जिन के निर्धारण के लिए बिल्कुल सही क्षति रहित कीमत (एनआईपी) की गणना करने के लिए पृथक उत्पादन लागत वांछनीय होगी। तथापि, यदि घरेलू उद्योग द्वारा यह सूचना नहीं रखी जाती है तो यह गणना उपलब्ध प्रामाणिक सूचना पर आधारित करनी होगी। इस प्रकार परिकलित क्षति रहित कीमत अनुपयुक्त हो सकती है। तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क किसी भी तरह से पाटन मार्जिन के मूल्य से अधिक नहीं होगा।

च पाटन मार्जिन के निर्धारण की पद्धति

च.1 घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

16. यह अनुरोध किया गया है कि संबद्ध देश अर्थात् चीन और वियतनाम भारतीय पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश हैं अतः चीन और वियतनाम के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 में वर्णित प्रक्रिया के अनुसार किया जाना अपेक्षित है।

17. यह अनुरोध किया गया है कि किसी गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश के मामले में सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ प्रथम विकल्प के रूप में किसी उचित तीसरे बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश का चुनाव किया जाना अपेक्षित है। यह प्रस्तावित था कि चीनी ताइपेई ताइवान को उचित बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के रूप में लिया जाए। यह अनुरोध किया गया है कि संबद्ध वस्तु के विनिर्माण हेतु चीन और वियतनाम में क्षमता चीनी ताइपेई में विनिर्माण सुविधा से मिलती-जुलती है। यह भी अनुरोध किया गया है कि इस तथ्य के मद्देनजर ताइवान को एक प्रतिनिधि देश माना जाना चाहिए कि उद्योग की संरचना संयंत्रों की औसत क्षमता, लागत ढांचा, उत्पादन प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी संबद्ध देशों में उपलब्ध विशिष्टताओं से काफी मिलती-जुलती है। घरेलू उद्योग के भी ताइवान में किसी उत्पादक के साथ कोई संपर्क या संबंध नहीं हैं। यह प्रस्तावना इस तथ्य द्वारा भी निर्देशित है कि ताइवान स्थानीय उत्पादकों तथा आयातित वस्तुओं के बीच पर्याप्त प्रतिस्पर्धा के साथ एक बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश है। ऐसी स्थितियां बाजार द्वारा निर्धारित कीमतों की अच्छी संकेतक हैं।

18. इसे अलावा यह अनुरोध किया गया था कि घरेलू उद्योग ने ताइवान से अन्य देशों को होने वाले निर्यात की कीमतों के ब्यौरे संबंधी सूचना प्राप्त करने का प्रयास किया था। परंतु वे ताइवान में कीमतों के संबंध में कोई दस्तावेजी साक्ष्य या विश्वसनीय सूचना प्राप्त करने में सक्षम नहीं रहे थे क्योंकि यह सूचना सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है। जांच शुरूआत के प्रयोजनार्थ ताइवान में सामान्य मूल्य का परिकलन किया गया था क्योंकि ऐसा करना पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैराग्राफ 7 के प्रावधानों की दृष्टि से विकल्पों के पहले समूह के अंतर्गत अनुमत पद्धतियों में से एक है।

च.2 सहयोगी निर्यातकों के लिए बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार

19. जांच शुरूआत के स्तर पर प्राधिकारी ने पाटनरोधी जांच के प्रयोजनार्थ नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा-8 (2) के अनुसार चीन जन.गण. और वियतनाम को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश मानते हुए कार्रवाई की है। जांच की शुरूआत पर प्राधिकारी ने इन देशों के उत्पादकों/निर्यातकों को जांच शुरूआत की सूचना का उत्तर देने और उनके बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे के निर्धारण हेतु संगत सूचना उपलब्ध कराने की सलाह दी थी।

20. प्राधिकारी ने नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा-8(3) में उल्लिखित मापदंडों के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था की पूर्व धारणा का खंडन करने के लिए सभी ज्ञात निर्यातकों को बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी व्यवहार की प्रश्नावली की प्रतियां भेजी थीं। प्राधिकारी ने चीन और वियतनाम की सरकार से उनके देशों में उत्पादकों/निर्यातकों को सूचना उपलब्ध कराने की सलाह देने के लिए भी अनुरोध किया था।

च.3 मै. जियांगसू हेंगली केमिकल्स फाइबर कंपनी लि., चीन जन.गण. द्वारा किए गए अनुरोध

21. यह बताया गया है कि घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित आरोप लगाए हैं:

1. चीन एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था है;
2. पूर्व में निर्दिष्ट प्राधिकारी ने चीन को एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था माना है । अतः इस देश को एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था माना जाना चाहिए ।
3. चीन के निर्यातकों के संबंध में सामान्य मूल्य का परिकलन किए जाने की जरूरत है ।

22. यह भी बताया गया है कि व्यापार के कानून के अंतर्गत यह एक स्थापित स्थिति है कि यदि किसी देश को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था माना भी जाता है, तो भी किसी कंपनी को बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार दिया जा सकता है बशर्ते कि वह बाजार अर्थव्यवस्था के निर्धारण हेतु निर्धारित मापदंडों को पूरा करती हो । यह तथ्य रिकॉर्ड किया जाए कि डीजीएडी ने स्वयं पिछले चार वर्षों में चीन की अनेक कंपनियों को बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार प्रदान किया है । इसके अलावा यह बताया गया है कि भारतीय कानून के अंतर्गत न केवल सामान्यतः बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा विचार किए जाने वाले चार मापदंडों को निर्धारित किया गया है बल्कि ऐसे मापदंडों पर विचार करने की स्थितियां भी निर्धारित की गई हैं । विशिष्ट रूप से शब्द जैसे "राज्य का अत्यधिक हस्तक्षेप", "पर्याप्त रूप से प्रदर्शित", "अत्यधिक विकृतियां", "पर्याप्त साक्ष्य", "बाजार की स्थितियां प्रचलित होना", आदि ऐसी स्थितियां हैं जिन पर निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे के लिए मापदंडों की गणना और उनका अनुप्रयोग करते समय विचार किया जाना चाहिए । यह अनुरोध किया गया है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी को किसी निर्दिष्ट गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश से किसी सहयोगी निर्यातक के लिए बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार से संबंधित भारतीय कानूनों का प्रयोग करना चाहिए । केवल तभी जबकि यह साबित होता हो कि संबद्ध सामग्री की लागत और कीमत निर्धारण पर प्रभाव डालते हुए राज्य द्वारा पर्याप्त हस्तक्षेप किया जा रहा है और प्रमुख निविष्टियों की लागतें बाजार मूल्य को पर्याप्त रूप से प्रदर्शित करती हैं । ऐसी जांच में राज्य के पर्याप्त हस्तक्षेप पर अधिक जोर दिया जाए क्योंकि विश्व में कहीं भी कोई उद्यम एक या किसी अन्य रूप में राज्य के हस्तक्षेप के बिना कार्य नहीं कर सकता है ।

23. यह भी अनुरोध किया गया है कि मै. जियांगसू हेंगली केमिकल्स फाइबर कंपनी लि., चीन जन.गण. की स्थापना वर्ष 2002 में *** मिलियन अमरीकी डॉलर की पंजीकृत पूंजी के साथ एक शेयर धारक कंपनी के रूप में की गई थी । इसके प्रमुख व्यापार में पालिस्टर फाइबर और भिन्न-भिन्न रासायनिक फाइबर का विनिर्माण और बिक्री करना शामिल है ।

24. मै. जियांगसू हेंगली केमिकल्स फाइबर कंपनी लि. का स्वामित्व निम्नलिखित कंपनियों के पास है :-

1. सुझोऊ सेंगलून इन्वेस्टमेंट कंपनी लि.,
2. सुझोऊ हुवेर इन्वेस्टमेंट कंपनी लि.,
3. टक शिंग ली इंटरनेशन होल्डिंग्स लि.

इस कंपनी के ये सभी शेयर धारक न तो राज्य के स्वामित्व वाले हैं और न ही इनका राज्य से कोई प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष संबंध है । इसके अलावा यह भी अनुरोध किया गया है कि भारत में पाटनरोधी नियमावली के अनुसार पूर्ववर्ती राज्य के स्वामित्व वाली कंपनी जिसे उचित ढंग से निजी व्यक्तियों को हस्तांतरित किया गया है, को भी बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे का दावा करने से प्रतिबंधित नहीं किया गया है । यदि वे यह साबित करने में सक्षम होते हैं कि वे बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली के अंतर्गत प्रचालन कर रहे हैं । पूर्व समय में माननीय निर्दिष्ट

प्राधिकारी ने ऐसी अनेक कंपनियों को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान किया है। इसके विपरीत जियांगसू हेंगली पूर्णतः निजी रूप से स्थापित है और इसका स्वामित्व निजी कंपनियों के पास है। इस प्रकार जियांगसू हेंगली को माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान किया जाना चाहिए।

25. प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस निर्यातक की स्थापना युन चुन होल्डिंग लिमिटेड द्वारा वर्ष 2002 में एक पूर्णतः विदेशी स्वामित्व वाले उद्यम के रूप में हांगकांग में की गई थी। इसी वर्ष 75% शेयर वूजियांग केमिकल फाइबर वीविंग फैक्टरी को अंतरित कर दिए गए। तत्पश्चात बचे हुए शेयर युन चुन होल्डिंग लिमिटेड और हांगकांग तकशिग इंटरनेशनल होल्डिंग लिमिटेड को अंतरित किए गए। वूजियांग केमिकल फाइबर वीविंग फैक्टरी ने अपने शेयर वर्ष 2007 में सुझोऊ हुआर इन्वेस्टमेंट कंपनी लि. को अंतरित कर दिए।

26. निर्यातक को वार्षिक रिपोर्ट उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया, जिसमें होल्डिंग कंपनी के कार्यकलापों एवं तुलन-पत्र का उल्लेख किया गया है। निर्यातक से शेयरों के मूल्य निर्धारण की विधि एवं भुगतान की पद्धति स्पष्ट करने का अनुरोध किया गया। इसके उत्तर में बताया गया कि वर्तमान दोनों होल्डिंग कंपनियों की स्थापना 2007 में की गई थी, अतः कोई वार्षिक रिपोर्ट उपलब्ध नहीं है। तथापि हांगकांग तकशिग इंटरनेशनल होल्डिंग लिमिटेड की वार्षिक रिपोर्ट एवं तुलन पत्र उपलब्ध कराए गए। यह भी कहा गया है कि "शेयरों का अंतरण करते समय शेयरों का मूल्य निर्धारण केवल पक्षकारों के बीच वार्ता के माध्यम से किया जाता है। शेयरों के अंतरण का आंशिक भुगतान बैंक के माध्यम से और नकद रूप में भी किया जाता है।"

27. यह नोट किया गया है कि वूजियांग केमिकल फाइबर वीविंग फैक्टरी विनिर्माण कार्यकलाप में संलग्न थी अतः वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार इस कंपनी का निवेशक वही है, जो अन्य होल्डिंग कंपनियों का है। प्रदत्त सूचना से प्रतीत होता है कि कंपनी अपने कानूनी ढांचे में परिवर्तन के कारण रूपांतरण की प्रक्रिया में थी। यह देखते हुए कि शेयरों के मूल्य निर्धारण के संबंध में कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई है, यह अभिनिश्चित कर पाना संभव नहीं है कि शेयरों का अंतरण बाजार मूल्य के अनुसार किया गया, अतः उल्लेखनीय विकृति से इन्कार नहीं किया जा सकता।

28. उपर्युक्त के मद्देनजर इस अवस्था में उपर्युक्त निर्यातक कंपनी के सही स्वरूप का अभिनिश्चय कर पाना संभव नहीं है। अतः प्राधिकारी द्वारा प्राथमिक जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ इस निर्यातक को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा नहीं दिया गया है।

च.4 वूक्सी गॉडशिप इण्डस्ट्री एण्ड ट्रेड कं. लि.

29. यह निवेदन किया गया है कि वूक्सी गॉडशिप इण्डस्ट्री एण्ड ट्रेड कं. लि. (गॉडशिप ट्रेड) एफडीवाई का निर्यात करती है, जिसका विनिर्माण इसकी संबद्ध कंपनी जियांगसू केमिकल फाइबर कंपनी लि. द्वारा दोनों के बीच प्रोसेसिंग संविदा के आधार पर किया जाता है।

34. होल्टिंग कंपनियों के कार्यकलापों और शेयर होल्डरों के बारे में अपर्याप्त सूचना के मद्देनजर इस अवस्था में उपर्युक्त ग्रुप कंपनी के स्वरूप का अभिनिश्चिद्य कर पाना संभव नहीं है । अतः प्राधिकारी द्वारा प्राथमिक जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ इस निर्यातक को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान नहीं किया गया है ।

च.6 सामान्य मूल्य

च.7 चीन जन.गण. के लिए सामान्य मूल्य

35. गैर बाजार अर्थव्यवस्था के उद्गम के निर्यातों से संबंधित पाटनरोधी जांच में सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 2 के पैरा 7 के अनुसार किया जाएगा। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी नियमावली के पैरा 7 में प्रावधान है कि :

"गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयातों के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में कीमत अथवा संरचित मूल्य अथवा ऐसे तीसरे देश से भारत सहित अन्य देशों के मूल्य के आधार पर किया जाएगा अथवा जहां यह संभव न हो, किसी अन्य समुचित आधार पर किया जाएगा जिसमें समान उत्पाद के लिए वास्तविक रूप से भुगतान की गई अथवा भारत में भुगतान की गई कीमत शामिल है, जिसमें यदि जरूरी हो, तो लाभ की समुचित मार्जिन को भी विधिवत समायोजित किया जाएगा।"

36. जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया गया है, किसी भी सहयोगी निर्यातक को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान नहीं किया गया है। अतः सामान्य मूल्य का निर्धारण नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के अनुसरण में किया गया है। घरेलू उद्योग ने आवेदन करते समय सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु सहोदर देश के रूप में चीनी ताइपेई का प्रस्ताव किया था। तथापि इस संबंध में प्राधिकारी को कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई थी। सहयोगी निर्यातकों ने भी अपने उत्तरों में "समुचित बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश" के रूप में चीनी ताइपेई के बारे में कोई टिप्पणी नहीं की थी। अतः प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का निर्धारण "किसी अन्य समुचित आधार" विधि के अनुसार किया है।

37. सामान्य मूल्य की गणना के प्रयोजनार्थ भारत में कच्चे माल की कीमतों, खपत मानदंडों एवं घरेलू उद्योग के कार्यक्षम उत्पादक की परिवर्तन लागत पर विचार किया गया है। सामान्य मूल्य ज्ञात करने के लिए 5% की दर से लाभ भी जोड़ दिया गया है। इस विधि से सामान्य मूल्य का निर्धारण *** डॉलर/किग्रा. किया गया है।

च.8 सहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

च.9 जियांगसू हेंगली केमिकल फाइबर कंपनी लि.

38. निर्यातक ने जांच अवधि के दौरान भारत को किए गए निर्यातों का सौदेवार ब्यौरा उपलब्ध कराया है। प्राथमिक जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु निर्यात के सभी सौदों पर विचार किया गया है। कारखाना द्वार निर्यात कीमत ज्ञात करने के लिए स्थानीय परिवहन, पैकिंग, समुद्री मालभाड़े, बीमे, सीमाशुल्क संस्वीकृति, प्रहस्तन पर किए गए व्यय एवं निर्यातक द्वारा दावा किए गए अन्य व्ययों को समायोजित किया गया है। इस विधि से कारखाना द्वार भारित औसत निर्यात कीमत *** डॉलर/किग्रा. निर्धारित की गई है।

च.10 टोंगकुन ग्रुप कंपनी लि.

39. निर्यातक ने जांच अवधि के दौरान भारत को किए गए निर्यातों का सौदेवार ब्यौरा उपलब्ध कराया है। प्राथमिक जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु निर्यात के सभी सौदों पर विचार किया गया है। कारखाना द्वार निर्यात कीमत ज्ञात करने के लिए पैकिंग, समुद्री मालभाड़े, बीमे, पत्तन शुल्क पर किए गए व्यय एवं निर्यातक द्वारा दावा किए गए बैंक व्ययों को समायोजित किया गया है। इस विधि से कारखाना द्वार भारित औसत निर्यात कीमत *** डॉलर/किग्रा. निर्धारित की गई है।

च.11 टोंगकुन ग्रुप हेंगशेंग केमिकल फाइबर कंपनी लि.

40. निर्यातक ने जांच अवधि के दौरान भारत को किए गए निर्यातों का सौदेवार ब्यौरा उपलब्ध कराया है। प्राथमिक जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु निर्यात के सभी सौदों पर विचार किया गया है। कारखाना द्वार निर्यात कीमत ज्ञात करने के लिए पैकिंग, समुद्री मालभाड़े, बीमे, पत्तन शुल्क पर किए गए व्यय एवं निर्यातक द्वारा दावा किए गए बैंक व्ययों को समायोजित किया गया है। इस विधि से कारखाना द्वार भारित औसत निर्यात कीमत *** डॉलर/किग्रा. निर्धारित की गई है।

च.12 वूक्सि गॉडशिप इंडस्ट्री एंड ट्रेड कंपनी लि.

41. निर्यातकों ने यह बताया है कि इसकी संबंधित कंपनी जियांगसू गॉडशिप केमिकल फाइबर कंपनी लि. द्वारा विनिर्मित वस्तुएं जांच अवधि के दौरान भारत को निर्यात की गई थीं। इस संबंध में निर्यातक ने जांच अवधि के दौरान भारत को किए गए निर्यातों का सौदेवार ब्यौरा उपलब्ध कराया है। प्राथमिक जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु निर्यात के सभी सौदों पर विचार किया गया है। कारखाना द्वार निर्यात कीमत ज्ञात करने के लिए कमीशन, स्थानीय परिवहन, समुद्री मालभाड़े, बीमे, प्रहस्तन तथा बैंक व्ययों पर निर्यातक द्वारा दावा किए गए व्ययों को समायोजित किया गया है। इस विधि से कारखाना द्वार भारित औसत निर्यात कीमत *** डॉलर/किग्रा. निर्धारित की गई है।

च.13 असहयोगी निर्यातक हेतु निर्यात कीमत

42. असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत ज्ञात करने के लिए इमॉर्टल कम्प्यूटर लैब प्रा.लि. द्वारा भारत को उपलब्ध कराए गए सौदेवार निर्यात के ब्यौरे पर विचार किया गया है। चूंकि ये सौदे सीआईएफ आधार पर हैं अतः कारखाना द्वार निर्यात कीमत का निर्धारण करने के लिए भारत को किए गए निर्यात के कारण हुआ व्यय समायोजित कर लिया गया है। इस प्रयोजनार्थ सहयोगी निर्यातक द्वारा घोषित व्यय पर विचार किया गया और समायोजित किया गया। इस विधि से कारखाना द्वार निर्यात कीमत *** डॉलर/किग्रा. निर्धारित की गई है।

च.15 वियतनाम

च.16 वियतनाम हेतु सामान्य मूल्य

43. वियतनाम से फार्मोसा इंडस्ट्रीज कारपोरेशन ने नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8(2) के अंतर्गत गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान का खंडन करने के लिए सूचना उपलब्ध कराई

है। जांच के दौरान यह नोट किया गया कि निर्यातक ने अन्य देश में स्थित एक व्यापारी के माध्यम से भारत के साथ व्यवसाय संचालित किया है। चूंकि व्यापारी द्वारा भारत को किए गए निर्यात सौदों का कोई ब्यौरा उपलब्ध नहीं कराया गया है, अतः भारत को किए गए सौदों की श्रृंखला को पूर्ण कर पाना संभव नहीं है। प्राथमिक जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ सहयोगी उत्पादक/निर्यातक हेतु अलग से कोई पाटन मार्जिन निर्धारित नहीं की गई है। प्राधिकारी द्वारा यह जांच करने के लिए कि क्या निर्यातक द्वारा इस संबंध में प्रस्तुत साक्ष्य पर विचार करके निर्यात सौदों की श्रृंखला को पूरा कर पाना संभव है, प्राथमिक जांच परिणाम के पश्चात इस मामले की आगे जांच की जाएगी।

44. प्राथमिक जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ वियतनाम पर गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के रूप में विचार किया गया है और सामान्य मूल्य का निर्धारण नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा-7 के अनुसरण में किया गया है। घरेलू उद्योग ने आवेदन प्रस्तुत करते समय सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु एक सहोदर देश के रूप में चीनी ताइपेई का प्रस्ताव किया था, तथापि इस संबंध में प्राधिकारी को कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई थी। सहयोगी निर्यातकों द्वारा दिए गए उत्तरों में भी "समुचित बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश" के रूप में चीनी ताइपेई के बारे में कोई टिप्पणी नहीं की गई है। अतः प्राधिकारी ने "किसी अन्य समुचित आधार पर" विधि के अनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है।

45. सामान्य मूल्य की गणना के प्रयोजनार्थ भारत में कच्चे माल की कीमत, खपत मानदंड एवं घरेलू उद्योग के कार्यक्षम उत्पादक की परिवर्तन लागत पर विचार किया गया है। सामान्य मूल्य ज्ञात करने के लिए 5% की दर से लाभ भी इसमें जोड़ दिया गया है। इस विधि से सामान्य मूल्य का निर्धारण ***डॉलर/किग्रा. किया गया है।

च.17 असहयोगी निर्यातकों हेतु निर्यात कीमत

46. असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत ज्ञात करने के लिए इम्पोर्टल कम्प्यूटर लैब प्रा.लि. द्वारा भारत को उपलब्ध कराए गए सौदेवार निर्यात के ब्यौरे पर विचार किया गया है। चूंकि ये सौदे सीआईएफ आधार पर हैं अतः कारखाना-द्वार निर्यात कीमत का निर्धारण करने के लिए भारत को किए गए निर्यात के कारण हुआ व्यय समायोजित कर लिया गया है। जहां तक माल भाड़े एवं बीमे का संबंध है, सहयोगी निर्यातक द्वारा कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई। अतः समायोजन हेतु घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त सूचना पर विचार किया गया है। इस विधि से कारखाना द्वार निर्यात कीमत का निर्धारण *** डॉलर/किग्रा. किया गया है।

च.18 थाईलैण्ड

47. मै. थाई पॉलिएस्टर कंपनी लि. ने जांच शुरुआत अधिसूचना का उत्तर दिया था और घरेलू एवं निर्यात बिक्री सौदों के संबंध में ब्यौरा प्रस्तुत किया था। जांच के दौरान यह देखा गया कि भारत से किया गया व्यवसाय किसी अन्य देश में स्थित एक व्यापारी के माध्यम से किया गया है। निर्यातक ने सूचित किया कि व्यापारी को प्रदत्त कीमतों को भारत की निर्यात कीमत मान लिया जाए, तथापि व्यापारी द्वारा भारत को निर्यात कीमत के बारे में कोई ब्यौरा उपलब्ध नहीं कराया गया। चूंकि भारत को किए गए सौदों की श्रृंखला को सिद्ध नहीं किया जा सका, अतः प्राथमिक जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ इस निर्यातक हेतु अलग से कोई पाटन मार्जिन निर्धारित नहीं की गई है। प्राधिकारी द्वारा यह जांच करने के लिए कि क्या निर्यातक

द्वारा इस संबंध में प्रस्तुत साक्ष्य पर विचार करके निर्यात सौदों की श्रृंखला को परा कर पाना संभव है। प्राथमिक जांच परिणाम के पश्चात इस मामले की आगे जांच की जाएगी।

च.19 इण्डोपोली (थाइलैण्ड) लि. द्वारा किया गया निवेदन

48. घरेलू बाजार में बेची गई वस्तुओं और भारत को निर्यातित वस्तुओं के बीच कोई अंतर नहीं है। उत्पादित एसडीवाई का वर्गीकरण दो ग्रेडों में किया जाता है जो ए क्वालिटी तथा पीक्यू क्वालिटी हैं। पीक्यू क्वालिटी के उत्पादों (पीक्यू ग्रेड) को पोतों द्वारा भारत एवं घरेलू बाजार में भिजवा दिया जाता है और इनकी कोई डाइंग गारंटी नहीं होती और इनका उत्पादन कमतर ग्रेड के कच्चे माल तथा उपयोगित, पुनरुपयोगित पैकिंग सामग्री और स्नेहकों से किया जाता है। आगे यह भी स्पष्ट किया गया कि उत्पादन प्रक्रिया के दौरान डाउनग्रेडेड पीटीए एवं एमईजी के प्रयोग से एसडीवाई की पीक्यू ग्रेड का उत्पादन किया जाता है। डाउन ग्रेडेड कच्चे माल की लागत अपेक्षाकृत कम होती है।

49. निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के अध्ययन से यह नोट किया गया कि कमतर ग्रेड की बिक्री का प्रतिशत काफी अधिक दर्शाया गया है और इसी की बिक्री भारत को की गई दर्शायी गई है। यह दावा किया गया है कि की गई बिक्री पीक्यू ग्रेड की थी, तथापि कुछेक नमूना बिक्रीकों से यह संकेत मिलता है कि यह बिक्री ए क्वालिटी से संबंधित थी। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग का कहना है कि उत्पादन प्रक्रिया में नियंत्रित मानदंडों में परिवर्तन के कारण अनाशयित कमतर गुणवत्ता के उत्पादों का बहुत कम प्रतिशत उत्पादित हो जाता है। प्राधिकारी द्वारा साक्ष्य एवं कंपनी के वास्तविक रिकार्डों का अध्ययन करने के बाद निर्यातक के इस कथन की आगे जांच की जाएगी। प्राथमिक जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ पाटन मार्जिन का निर्धारण करते समय गुणवत्ता के अंतर पर ध्यान नहीं दिया गया है।

च.20 थाइलैण्ड में सामान्य मूल्य

50. सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ निर्यातक ने घरेलू बिक्री का सौदेवार ब्यौरा प्रस्तुत किया है। भारित औसत पीसीएन वार सामान्य मूल्य की गणना हेतु सभी सौदों पर विचार किया गया है। कारखाना द्वारा स्तर पर सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु निर्यातक ने बिक्री के दौरान किए गए व्ययों का ब्यौरा उपलब्ध कराया है और इसी पर विचार किया गया है। पीसीएन वार भारित औसत सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु ऋण लागत, कमीशन, माल भाड़े, प्रहस्तन, बीमे पर किए गए व्यय तथा सीटीएस व्ययों को समायोजित किया गया है। इस विधि से भारित औसत सामान्य मूल्य का निर्धारण *** डॉलर/किग्रा. किया गया है।

च.21 सहयोगी निर्यातकों हेतु निर्यात कीमत**च.22 इण्डोपॉली (थाईलैण्ड) लि.**

51. निर्यातक ने जांच अवधि के दौरान भारत को किए गए निर्यातों का ब्यौरा प्रस्तुत किया है। प्राथमिक जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु अन्य देश के व्यापारी के माध्यम से किए गए सौदों को छोड़कर निर्यात के सभी सौदों पर विचार किया गया है।

52. कारखाना-द्वारा निर्यात कीमत ज्ञात करने के लिए स्थानीय परिवहन पर किया गया व्यय, समुद्री मालभाड़े, बीमे तथा निर्यातक द्वारा दावा किए गए अन्य व्ययों को समायोजित किया गया है। इस विधि से कारखाना-द्वारा भारित औसत निर्यात कीमत का निर्धारण *** डॉलर/किग्रा. किया गया है।

च.23 असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

53. असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत ज्ञात करने के लिए इमॉर्टल कम्प्यूटर लैब प्रा.लि. द्वारा भारत को उपलब्ध कराए गए सौदेवार निर्यात के ब्यौरे पर विचार किया गया है। चूंकि ये सौदे सीआईएफ आधार पर हैं अतः कारखाना-द्वारा निर्यात कीमत का निर्धारण करने के लिए भारत को किए गए निर्यात के कारण हुआ व्यय समायोजित कर लिया गया है। इस प्रयोजनार्थ सहयोगी निर्यातक द्वारा घोषित व्यय पर विचार किया गया और समायोजित किया गया। इस विधि से कारखाना-द्वारा निर्यात कीमत *** डॉलर/किग्रा. निर्धारित की गई है।

च.24 पाटन मार्जिन

54. सामान्य मूल्य तथा ऊपर निर्धारित निर्यात कीमत के आधार पर पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नानुसार किया गया है:

	सामान्य मूल्य	निर्यात कीमत	पाटन मार्जिन	पाटन मार्जिन %
चीन जन.गण.				
टोंगकुन ग्रुप कं.लि.	***	***	***	13.74
टोंगकुन ग्रुप हेंगहोंग केमिकल फाइबर कं.लि.	***	***	***	15.72
वूक्सी गॉडशिप इण्डस्ट्री एंड ट्रेड कं.लि.	***	***	***	19.89

जियांगसू हेंगली केमिकल्स फाइबर कं. लि.	***	***	***	7.28
चीन जन.गण. के असहयोगी निर्यातक	***	***	***	46.55
वियतनाम	***	***	***	
वियतनाम के असहयोगी निर्यातक	***	***	***	16.32
थाइलैण्ड	***	***	***	
इण्डो पॉली (थाइलैण्ड) लि.	***	***	***	23.78
थाइलैण्ड के असहयोगी निर्यातक	***	***	***	12.61

उपर्युक्त निर्धारित पाटन मार्जिन न्यूनतम से अधिक हैं ।

छ. क्षति निर्धारण हेतु कार्य प्रणाली और कारणात्मक संबंध की जांच

छ.1 घरेलू उद्योग के विचार

घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:-

55. संबद्ध देशों से आयातों का हिस्सा अप्रैल, 04-मार्च, 05 में 4.83% से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 89.64% हो गया है । यह भी देखा जा सकता है कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से हुए आयातों में अप्रैल 04-मार्च, 05 तक के वर्ष में हुए आयातों की तुलना में लगभग 24 गुना वृद्धि हुई है । इससे स्पष्ट तौर पर यह पता चलता है कि संबद्ध देशों के निर्यातकों द्वारा अपनाई गई कीमत कटौती की आक्रामक नीति के कारण संबद्ध देशों से आयातों ने उच्चतर बाजार हिस्से पर कब्जा कर लिया है ।

56. इसके अलावा, भारत में कुल मांग की तुलना में संबद्ध देशों से हुए आयात अप्रैल, 04-मार्च, 05 के दौरान 1.45% से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 20.37% हो गए हैं ।

57. याचिकाकर्ताओं के घरेलू उत्पादन के प्रतिशत की तुलना में संबद्ध देशों से आयात अप्रैल, 04-मार्च, 05 के वर्ष में 4.33% के स्तर से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 39.24% हो गए हैं । इस प्रकार, संबद्ध देशों से आयातों में न केवल समग्र रूप में अपितु भारत में कुल आयातों, बाजार मांग और घरेलू उत्पादन के हिस्से के रूप में भी वृद्धि हुई है ।

58. यह अनुरोध किया गया है कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से पहुंच मूल्य में आगे और गिरावट आई है जो पिछले दो वर्षों में पहले से ही कम चल रही थी जबकि घरेलू उद्योग

सतत दबाव में था और वह अपनी बिक्री कीमत में वृद्धि नहीं कर सका। वस्तुतः क्षति जांच अवधि के दौरान घरेलू बिक्री कीमत में गिरावट आई है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

59. क्षति की जांच की अवधि के दौरान मांग में 73% वृद्धि होने के कारण घरेलू उद्योग के हिस्से में भी वृद्धि हुई है। पिछली जांच में इंडोनेशिया, कोरिया, मलेशिया एवं ताइवान के विरुद्ध शुल्क लगाए जाने के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में भी वृद्धि हुई है। तथापि यह देखा जा सकता है कि मांग में 73% की कुल वृद्धि की तुलना में घरेलू बिक्रियों के हिस्से में केवल 7% की वृद्धि हुई, जिससे यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि घरेलू बिक्री की मात्रा प्रभावित हुई है।

60. घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग, जो वर्ष अप्रैल, 04-मार्च, 05 के दौरान 83% था, बढ़कर जांच अवधि के दौरान 96% हो गया। वर्तमान मामले में क्षमता उपयोग के विश्लेषण से घरेलू उद्योग को हुई क्षति के प्रभाव के बारे में पर्याप्त सूचना प्राप्त नहीं होगी। संबद्ध वस्तुओं की क्षमता विभिन्न कारकों पर निर्भर होती है। उदाहरणार्थ कम डेनियर की तुलना में उच्च डेनियर की परिणति उच्चतर उत्पादन में होगी।

61. आधार वर्ष 2004-05 की तुलना में जांच अवधि के दौरान प्रति कर्मचारी उत्पादकता में सुधार हुआ है।

62. पिछली जांच में संबद्ध देशों की मात्रा में गिरावट और मांग में हुई वृद्धि के परिणामस्वरूप जांच की अवधि के दौरान घरेलू बिक्रियों में वृद्धि

63. कर्मचारियों की संख्या और उन्हें भुगतान की गई मजदूरी पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा है।

64. संबद्ध देशों द्वारा किए गए पाटन से घरेलू उद्योग की संबद्ध वस्तुओं की बिक्री से प्राप्त आय पर अत्यंत प्रतिकूल प्रभाव पड़ा था। यह निवेदन किया गया है कि संबद्ध देशों के निर्यातकों द्वारा व्यापक पैमाने पर की गई कीमत कटौती के कारण घरेलू उद्योग क्षति की अवधि के दौरान कीमत में वृद्धि करने में समर्थ नहीं था। अतः जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की लाभप्रदता नकारात्मक बनी रही।

65. यह निवेदन किया गया है कि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में गिरावट के कारण घरेलू उद्योग अपने निवेश से वांछित आय प्राप्त नहीं कर सका।

66. घरेलू उद्योग की मालसूचियों में वृद्धि हुई, जो स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के संबद्ध वस्तुओं की बिक्री में कठिनाई का सामना करता रहा।

67. यह नोट किया जा सकता है कि प्रत्येक संबद्ध देश से विचाराधीन उत्पाद का पहुंच मूल्य संबद्ध वस्तुओं की बिक्री से घरेलू उद्योग को जो कीमत प्राप्त होनी चाहिए थी, उससे

बहुत कम है। व्यापक पैमाने पर कम कीमत पर की गई बिक्री के क्षतिकारक प्रभाव के कारण घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन पर इसका प्रत्यक्ष एवं नुकसानदायक प्रभाव पड़ा।

68. संबद्ध वस्तुओं की बिक्री न केवल अत्यंत कम कीमत पर हुई, अपितु संबद्ध देशों के निर्यातकों ने उल्लेखनीय कीमत कटौती भी की है; अतः पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की क्षति और भी बढ़ गई है। इस प्रकार घरेलू उद्योग पर अपनी कीमतों को वर्तमान कीमतों, जो लाभदायक हैं ही नहीं, से भी कम बनाए रखने का लगातार दबाव बना हुआ है।

69. यह निवेदन किया गया है कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का नकद लाभ ***% के अत्यंत मामूली स्तर पर था, जो घरेलू उद्योग को हई क्षति को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

70. यह निवेदन किया गया है कि आधार वर्ष 2004-05 की तुलना में जांच अवधि के दौरान देश में मांग में 73% की वृद्धि हुई है, जबकि इसी अवधि में घरेलू बिक्रियों के बाजार हिस्से में केवल 8.72% की वृद्धि हुई है।

71. जांच अवधि के दौरान कम आय के मद्देनजर क्षमता में और अधिक विस्तार हेतु पूंजी जुटाने की घरेलू उद्योग की क्षमता व्यावहारिक नहीं है।

72. इस तथ्य के अलावा कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हो रही है, घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति का खतरा भी आसन्न है।

73. पूर्ववर्ती अवधि की तुलना में जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयातों में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। आयात अप्रैल 2004-मार्च, 2005 में 1610 मी.टन से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 39137 मी.टन हो गए हैं। संबद्ध देशों से आयात अत्यंत कम कीमतों पर किए जा रहे हैं, जिनके कारण घरेलू उद्योग अपनी लागत को वसूल कर पाने में भी समर्थ नहीं हैं। घरेलू उद्योग की कीमतों में मंदी के बावजूद संबद्ध देशों से वर्तमान में हो रही भारी कीमत कटौती के कारण घरेलू उद्योग घाटे में चल रहा है। इस समय याचिकाकर्ताओं के लिए प्रचालन अत्यंत कठिन हो गया है और घरेलू उद्योग का जीवित रह पाना भी कठिन हो रहा है। अतः संबद्ध देशों से वर्तमान पाटन को रोकने के लिए तुरंत कार्रवाई करना घरेलू उद्योग के हित में होगा।

74. घरेलू उद्योग यह भी समझता है कि संबद्ध देशों में निपटान योग्य क्षमता एवं बेशी उत्पादन अत्यंत व्यापक है और यदि पाटनरोधी शुल्क तुरंत नहीं लगाया जाता, तो इसके भारतीय बाजार में प्रवेश करने की संभावना है। जहां तक निर्यातकों की मालसूचियों का संबंध है, घरेलू उद्योग इसका कोई साक्ष्य नहीं जुटा सका है।

कारणात्मक संबंध के बारे में यह निवेदन किया गया है कि:

75. चीन, इंडोनेशिया, कोरिया, थाइलैंड एवं वियतनाम से इतर स्रोतों से संबद्ध वस्तुओं का आयात जांच अवधि के दौरान न्यूनतम से कम रहा है। इंडोनेशिया तथा कोरिया से आयात पाटनरोधी शुल्क के अधधीन हैं। अतः केवल संबद्ध देशों से आयात ही पाटित कीमतों पर किए जा रहे हैं और न्यूनतम सीमा से अधिक हैं, जिनके परिणामतः घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हो रही है। अन्य सभी देशों से आयात न्यूनतम से कम हैं। जांच की अवधि के दौरान मांग में, जांच अवधि की तुलना में वृद्धि हुई है। अतः मांग में गिरावट घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं है। संबद्ध वस्तुओं का बाजार एक ही है, जहां पाटित आयात घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुओं से प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धा करते हैं। कीमत का निर्धारण आपूर्तिकर्ता की पसंद के अनुसार होता है। पाटित वस्तुएं स्वदेशी उत्पादकों के उत्पादों को प्रतिस्थापित कर रही हैं। घरेलू रूप से उत्पादित संबद्ध वस्तुओं की तर्ज पर आयातित उत्पाद भी उसी वाणिज्यिक ग्रेडों, मानदंडों और विनिर्देशनों के अनुसार बेचा जाता है। आयातित वस्तुएं और घरेलू रूप से उत्पादित वस्तुएं समान वस्तुएं हैं और वे समान अनुप्रयोगों/अंतिम उपयोगों में प्रयुक्त की जाती हैं। अतः आयातित स्रोतों से अथवा घरेलू स्रोतों से वस्तु की खरीद में कीमत निर्धारण सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक बन जाता है। जहां तक संबद्ध उत्पादों का संबंध है, घरेलू उद्योग समुचित बिक्री कीमत/लाभ अर्जित नहीं कर पा रहा है। इसका प्रत्यक्ष कारण संबद्ध देशों से कम कीमत वाले आयातों को माना जा सकता है क्योंकि घरेलू उद्योग से संबद्ध देशों के आयातकों द्वारा दी जाने वाली कीमतों के अनुरूप रहने की सदैव अपेक्षा की जाती है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि ऐसी कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियां अथवा प्रौद्योगिकी संबंधी मुद्दे भी नहीं हैं, जिन्हें घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण माना जाए। घरेलू उद्योग की उत्पादकता में भी बढ़ोत्तरी हुई है, अतः घरेलू उद्योग की वित्तीय स्थिति पर कोई हानिकारक प्रभाव नहीं पड़ा है। जहां तक विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा का संबंध है, यह निवेदन किया गया है कि घरेलू उद्योग को केवल संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण अनुचित व्यापार से नुकसान हो रहा है। यदि आयात उचित सामान्य कीमतों पर किए जाते हैं, तो घरेलू उद्योग आयातों से पूर्णतः प्रतिस्पर्धा करने की स्थिति में होगा। यह नोट किया जा सकता है कि घरेलू बिक्रियों की तुलना में निर्यात बिक्रियों की मात्रा अत्यंत कम है। अतः घरेलू उद्योग के निर्यात कार्य निष्पादन ने घरेलू बाजार में याचिकाकर्ता की वित्तीय एवं आर्थिक स्थिति को किसी भी प्रकार से प्रभावित नहीं किया है। मामला चाहे जो हो, पूर्ववर्ती खंड में उल्लिखित क्षति विश्लेषण में निर्यात बिक्रियों को शामिल नहीं किया गया है।

भूतलक्षी प्रभाव से पाटनरोधी शुल्क लगाना

76. वर्तमान मामले में विचाराधीन उत्पाद का संबद्ध देशों द्वारा न केवल पाटन किया जा रहा है, अपितु पिछली जांच में भी संबद्ध देशों द्वारा इसका पाटन किया गया था। संबद्ध वस्तुओं का पिछले अन्य वर्षों से लगातार पाटन किया जा रहा है। अतः घरेलू उद्योग ने प्राधिकारी से अनंतिम पाटनरोधी शुल्क भूतलक्षी प्रभाव से यथाशीघ्र अधिरोपित करने का अनुरोध किया है। इस संबंध में सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की धारा 9 क (3) और धारा 9

क (2) के साथ पठित भारतीय पाटनरोधी नियमावली के नियम 20 तथा नियम 13 की ओर प्राधिकारी का ध्यान आकृष्ट किया गया है, जिसमें भूतलक्षी प्रभाव से शुल्क के अधिरोपण एवं उन परिस्थितियों का उल्लेख किया गया है जिनके अंतर्गत भूतलक्षी प्रभाव से शुल्क लगाया जा सकता है। धारा 9 क (3) तथा नियम 20 निम्नानुसार हैं :

"9 क (3) जांच के अधीन पाटित वस्तु के संबंध में यदि केन्द्र सरकार का यह अभिमत है कि -

(i) पाटन काफी पहले से किया जा रहा है, जिससे क्षति हुई है अथवा यह कि आयातक को यह ज्ञात था अथवा ज्ञात होना चाहिए था कि निर्यातक पाटन कर रहा है और यह कि ऐसे पाटन से क्षति पहुंचेगी; और

(ii) अपेक्षाकृत लघु अवधि में आयातित किसी वस्तु के भारी मात्रा में पाटन से क्षति हुई है, जिससे पाटित आयातित वस्तु के समय और मात्रा एवं अन्य परिस्थितियों के मद्देनजर लगाए जाने वाले पाटनरोधी शुल्क का सुधारात्मक प्रभाव कम होने की संभावना है, तो

केन्द्रीय सरकार राजपत्र में अधिसूचना के माध्यम से उप धारा (2) के अंतर्गत भूतलक्षी प्रभाव से पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की तारीख से पहले की तारीख से पाटनरोधी शुल्क लगा सकती है परंतु इस उपधारा के अंतर्गत अधिसूचना की तारीख से नब्बे दिन बाद और इस समय लागू किसी कानून में किसी बात के होते हुए भी ऐसे शुल्क का भुगतान उस दर एवं उस तारीख से किया जाएगा, जिसे अधिसूचना में विनिर्दिष्ट किया गया हो।

नियम 20(2)(ख): अधिनियम की धारा 9 क की उपधारा (3) में उल्लिखित परिस्थितियों में पाटनरोधी शुल्क को भूतलक्षी प्रभाव से ऐसा अनंतिम शुल्क लगाए जाने के नब्बे दिन पूर्व की तारीख से लगाया जा सकता है:

परंतु जांच की शुरुआत से पूर्व घरेलू खपत हेतु प्रविष्ट आयातों पर भूतलक्षी प्रभाव से कोई शुल्क नहीं लगाया जाएगा:

परंतु यह और कि नियम 15 के उप नियम (6) में उल्लिखित कीमत अभिवचन के उल्लंघन के मामलों में ऐसे अभिवचन की शर्तों के उल्लंघन से पूर्व घरेलू खपत हेतु प्रविष्ट आयातों पर भूतलक्षी प्रभाव से कोई शुल्क नहीं लगाया जाएगा।"

77. उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि भूतलक्षी प्रभाव से पाटनरोधी शुल्क लगाने के संबंध में पाटन का एक इतिहास रहा है जिसके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। वर्तमान मामले में भी पाटन का इतिहास है और घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। यह

देखा जा सकता है कि संबद्ध देशों से आयातों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और यह वर्ष 2004-05 से 1610 मी.टन से बढ़कर 39137 मी.टन हो गया है। इसके साथ-साथ पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान आयात (प्रतिशत के रूप में) बढ़कर लगभग दोगुने हो गए हैं। उल्लेखनीय है कि कतिपय देशों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद आयातों में निरपेक्ष रूप में तथा सापेक्ष रूप में अत्यधिक वृद्धि हुई है जिससे यह स्पष्ट है कि अपेक्षाकृत कम समय में ही भारी पाटन किए जाने के कारण क्षति हुई है। वर्तमान मामले में भी जांच अवधि के दौरान कुल आयातों में चीन, थाईलैण्ड तथा वियतनाम के आयातों का योगदान 89.64% है जो आधार वर्ष की तुलना में 4.83% बढ़ गया है, जैसा कि निम्नलिखित तालिका से देखा जा सकता है।

छ.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

छ.3 मै. जियांगसू हेंगली केमिकल लिमिटेड, चीन

78. यह निवेदन किया गया है कि वर्तमान जांच में संबद्ध देशों से कथित पाटित आयातों ने घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से की कीमत पर अपना बाजार हिस्सा प्राप्त नहीं किया है। संबद्ध देशों से आयातों ने जो भी बाजार हिस्सा अर्जित किया है, वह असंबद्ध देशों से आयातों को संबद्ध देशों में हटाकर किया है। इसके विपरीत घरेलू उद्योग ने आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान लगभग 17% बाजार हिस्सा अर्जित किया है। घरेलू उद्योग अपनी अनुकूलतम क्षमता उपयोग पर प्रचालित है और अपने उत्पादन को और बढ़ाने की स्थिति में नहीं है। इन परिस्थितियों में प्रयोक्ता उद्योग के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि मांग और आपूर्ति के बीच के अंतर को दूर करने के लिए वह संबद्ध सामग्री का आयात करे। यह भी निवेदन किया गया है कि घरेलू उद्योग की बिक्री में निरपेक्ष रूप में तथा मांग के प्रतिशत के रूप में वृद्धि हुई है और लाभप्रदता में सुधार हुआ है। घाटा कम हुआ है; उत्पादन एवं क्षमता उपयोग में वृद्धि के साथ उत्पादन भी बढ़ा है; घरेलू उद्योग ने 17% बाजार हिस्सा अर्जित कर लिया है; और उत्पादकता में सुधार हुआ है। गिरावट का कोई चिन्ह नहीं देखा गया है; आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान निवेश से आय में सुधार हुआ है; संस्थापित क्षमता तथा क्षमता उपयोग दोनों में वृद्धि हुई है; दावा की गई पाटन की मार्जिन काल्पनिक है और यह सहयोगी निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत सूचना पर आधारित नहीं है। इसकी डीजीएडी द्वारा गहराई से जांच की जानी जरूरी है; घरेलू उद्योग ने नकद प्रवाह के बारे में कोई आंकड़े प्रस्तुत नहीं किए हैं। इसके बावजूद वित्तीय कार्य निष्पादन में सुधार के मद्देनजर नकद प्रवाह की स्थिति में सुधार जरूर होता है; घरेलू उद्योग जांच की अवधि के दौरान जो कुछ उत्पादन कर सका, उसने उससे अधिक बिक्री की है। अतः मालसूचियों को आदिशेष स्टॉक के अनुसार दर्शाया गया है; जांच की अवधि के दौरान उत्पादन के संबंध में मालसूचियों का कोई संचय नहीं हुआ है; कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि उत्पादन में वृद्धि के प्रत्यक्ष अनुपात में है। रोजगार पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं है; कार्यबल में वृद्धि की तुलना में मजदूरी में भी वृद्धि हुई है। प्रदत्त मजदूरी पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं हुआ है; वृद्धि पर भी कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा है। भारत में अन्य उत्पादकों तथा कुल आयातों की तुलना में घरेलू उद्योग में

वृद्धि हुई है; घरेलू उद्योग आसानी से पूंजी जुटा सका, इसीलिए उसने संस्थापित क्षमता में 131% से अधिक की वृद्धि की है; घरेलू उद्योग ने इस उत्पाद में भारी निवेश किया है। निवेशों पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं हुआ है।

छ.4 मै. इंडोपॉली (थाईलैण्ड) लि.

79. यह निवेदन किया गया है कि आयातों के कारण कोई क्षति नहीं हुई है क्योंकि वास्तव में आयातों के बाजार हिस्से में कुल मांग की तुलना में निरपेक्ष रूप में तथा सापेक्षिक रूप में कमी आई है। यद्यपि जांच अवधि के दौरान आयातों में गिरावट आई है, तथापि वर्ष 2004-05 से जांच अवधि तक की अवधि में भारत में घरेलू उद्योग से मांग में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। जैसा कि घरेलू उद्योग ने स्वीकार किया है, उत्पादन तथा निर्यात क्षमता क्षति का कारण नहीं है। न केवल उत्पादन बल्कि उत्पादन की बिक्री में भी विश्लेषण की अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। जहां तक घरेलू उद्योग के इस कथन का संबंध है कि मात्रा में बढ़ोत्तरी के बावजूद घरेलू उद्योग को बिक्री से प्राप्त आय में सुधार नहीं हुआ है और क्षति की जांच अवधि के दौरान इसमें गिरावट आई है, यह निवेदन किया गया है कि क्षमता उपयोग में वृद्धि, उत्पादन में वृद्धि तथा बिक्री में वृद्धि को ध्यान में रखते हुए स्वयं घरेलू उद्योग की विभिन्न कंपनियों के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ने के कारण बिक्री से प्राप्त आय कम रही है। इसके अलावा, जैसा कि घरेलू उद्योग ने स्वयं स्वीकार किया है, आयातों के कारण प्रतिकूल प्रभाव चीन और वियतनाम से हुए आयातों के कारण पड़ा है। अतः घरेलू उद्योग को हुए घाटे के लिए थाईलैण्ड से हुए आयात जिम्मेवार नहीं हैं और थाईलैण्ड को जांच के दायरे से बाहर रखा जाना चाहिए। जहां तक लाभप्रदता का संबंध है, यह निवेदन किया गया है कि क्षमता उपयोग में वृद्धि, उत्पादन में वृद्धि तथा बिक्री में वृद्धि को ध्यान में रखते हुए स्वयं घरेलू उद्योग की विभिन्न कंपनियों के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ने के कारण बिक्री से प्राप्त आय कम रही है। अतः संबद्ध देशों से आयातों एवं बिक्री से प्राप्त कम आय तथा इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की लाभप्रदता पर हुए प्रभाव के बीच कोई सह-संबंध नहीं है। बाजार के हिस्से के रूप में आयातों के प्रतिशत में क्षति की अवधि के दौरान गिरावट आई है और घरेलू उद्योग को हुआ घाटा केवल घरेलू प्रतिस्पर्धा के कारण हुआ है, न कि आयातों के कारण।

छ.5 प्राधिकारी द्वारा जांच

80. यह नोट किया गया है कि पाटनरोधी शुल्क को भूतलक्षी प्रभाव से लगाने के संबंध में किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने कोई निवेदन नहीं किया है। प्राधिकारी जांच की कार्रवाई के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदन को ध्यान में रखते हुए अंतिम जांच परिणाम में इस मामले की जांच करेंगे। जहां तक क्षति के मानदंडों के विश्लेषण का संबंध है, यह विश्लेषण जिस सीमा तक जरूरी था, घरेलू उद्योग के आंकड़ों का सत्यापन करने के बाद और हितबद्ध पक्षों के तर्कों पर विचार करने के बाद किया गया है।

छ.6 क्षति का संचयी आकलन

81. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II (iii) में यह अपेक्षा की गई है कि जब एक से अधिक देशों के उत्पाद के आयातों की पाटनरोधी जांच एक साथ की जा रही हो, तो निर्दिष्ट प्राधिकारी ऐसे आयातों के प्रभाव का संचयी रूप से आकलन करेंगे, यदि यह निर्धारित हो जाता है कि :-

- I. अलग-अलग देशों से किए गए आयात न्यूनतम से अधिक हैं और आयातों में उनका संचयी योगदान 7% से अधिक है;
- II. अलग-अलग देशों के विरुद्ध पाटन मार्जिन 2% से अधिक है; और
- III. आयातित वस्तु और समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की शक्तों के अनुसार आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन समुचित है।

82. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटित आयात संबद्ध देशों सहित अनेक देशों से एक साथ भारतीय बाजार में प्रवेश कर रहे हैं। अतः इन स्रोतों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति के संचयी आकलन के मुद्दे की जांच उपर्युक्त मानदंडों के संदर्भ में की गई है और यह देखा गया है कि

- i) प्रत्येक संबद्ध देश से अलग-अलग उत्पादों के पाटन की मार्जिन न्यूनतम सीमा से अधिक है;
- ii) प्रत्येक संबद्ध देश/भू-भाग अलग-अलग उत्पादों के पाटन की मात्रा न्यूनतम सीमा से अधिक है;
- iii) घरेलू उत्पाद तथा विभिन्न देशों के उत्पादों द्वारा आपूर्तित उत्पाद समान वस्तुएं हैं;
- iv) संबद्ध देशों के आयातों के कारण बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में उल्लेखनीय कटौती हो रही है।

83. प्राधिकारी का अभिमत है कि इस मामले में क्षति का संचयी आकलन करना उचित है क्योंकि संबद्ध देशों से अलग-अलग उत्पादों के निर्यात एक-दूसरे से और घरेलू उद्योग द्वारा भारतीय बाजार में उतारी गई समान वस्तुओं से प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं।

84. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में क्षति के निर्धारण हेतु निर्धारित सिद्धांतों में यह प्रावधान है कि

"क्षति के निर्धारण में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव और ; (ख) पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातकों के परिणामी प्रभाव, दोनों की तथ्यपरक जांच शामिल होगी।"

85. जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव का प्रश्न है, पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के पैरा (iv) में उल्लेख किया गया है कि :

"संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय या क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट, सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों; घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों का मूल्यांकन शामिल होगा।"

छ.7 पाटित आयातों की मात्रा एवं बाजार हिस्सा

86. संबद्ध देशों और अन्य देशों से आयातों की मात्रा निम्नानुसार रही है:

	अप्रैल 04 से मार्च 05	अप्रैल 05 से मार्च 06	अप्रैल 06 से मार्च 07	जांच अवधि- अक्टू. 06 से सित. 07
संबद्ध देशों से आयात (मी.ट.)	1610	13252	31397	39137
कुल आयात (मी.ट.)	33368	33438	56953	43659
% हिस्सा	4.83%	39.63%	55.13%	89.64%

87. उपर्युक्त आंकड़े दर्शाते हैं कि संबद्ध देशों से आयातों का हिस्सा अप्रैल, 04-मार्च, 05 में 4.83% से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 89.64% हो गया। यह भी देखा गया है कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयातों में वर्ष अप्रैल 04-मार्च, 05 के आयातों की तुलना में लगभग 24 गुना वृद्धि हुई। इसी अवधि में संबद्ध देशों से आयातों में गिरावट आई, जो 31757 मी.टन से जांच अवधि में 4572 मी.टन हो गए अर्थात् इनमें आधार वर्ष की तुलना में 14.23% की गिरावट आई, जिससे स्पष्ट है कि कुछेक देशों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद संबद्ध देशों के आयातों ने अन्य देशों के आयातों के हिस्से पर कब्जा कर लिया।

छ.8 मांग में बाजार हिस्सा

88. मांग का आकलन घरेलू उद्योग की बिक्री, अन्य उत्पादकों (घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त अनुमान) और सभी देशों के आयातों को जोड़कर किया गया है। आंकड़े दर्शाते हैं कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान मांग में 74% की वृद्धि हुई है। मात्रा के रूप में मांग में 81033 मी.टन की वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग का हिस्सा आधार वर्ष में 37.8% से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 51.6% हो गया। मात्रा के रूप में 81033 मी.टन की मांग की तुलना में घरेलू उद्योग तथा अन्य उत्पादकों ने मांग में 70742 मी.टन की वृद्धि की है। संबद्ध देशों से मांग में हिस्से में आधार वर्ष में 1.5% से जांच अवधि में 20.5% की वृद्धि की,

जबकि इसी अवधि के दौरान अन्य देशों का हिस्सा 29% से घटकर 2.37% रह गया। मांग में कुल आयातों का हिस्सा 30.04% से घटकर 22.88% रह गया।

89. आबद्ध खपत तथा निर्यातों के अनुसार भी मांग का आकलन किया गया है। मांग में घरेलू उद्योग, अन्य उत्पादकों का हिस्सा, संबद्ध देशों से आयात, अन्य देशों से आयात और कुल आयात भी एक समान प्रवृत्ति दर्शाते हैं :-

	अप्रैल 04 से मार्च 05	अप्रैल 05 से मार्च 06	अप्रैल 06 से मार्च 07	जांच अवधि- अक्टू. 06 से सितं. 07
मांग				
घरेलू उद्योग की बिक्री	36043	43161	78940	98366
प्रवृत्ति	100	120	219	273
अन्य उत्पादकों की बिक्री	40355	41569	48647	48774
प्रवृत्ति	100	103	124	150
कुल आयात	33368	33438	56953	43659
कुल मांग	109965	118434	184541	190798
प्रवृत्ति	100	108	168	174
मांग में बाजार हिस्सा				
घरेलू उद्योग की बिक्री	32.78	36.48	42.70	51.44
अन्य उत्पादकों की बिक्री	36.7	35.2	26.4	25.6
संबद्ध देश	1.46	11.19	16.98	20.47
अन्य देश	28.88	17.08	13.85	2.37
कुल आयात	30.40	28.30	30.86	22.88

90. भारत में कुल मांग की तुलना में संबद्ध देशों से आयात अप्रैल 04-मार्च, 05 में 1.46% से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 20.47% हो गए हैं।

घरेलू उद्योग के उत्पादन की तुलना में आयात

	अप्रैल 04 से मार्च 05	अप्रैल 05 से मार्च 06	अप्रैल 06 से मार्च 07	जांच अवधि-अक्टू. 06 से सितं. 07
--	--------------------------	--------------------------	--------------------------	---------------------------------------

संबद्ध देशों से आयात	1610	13252	31397	39137
उत्पादन (मी.ट.)	37227	51928	84406	99479
हिस्सा	4.33%	25.52%	37.20%	39.34%

91. आंकड़े दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग के उत्पादन के प्रतिशत के रूप में आयात आधार वर्ष 2004-05 में 4.33% से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 39.34% हो गए ।

92. आंकड़ों से यह स्पष्ट है कि संबद्ध देशों से आयात न केवल निरपेक्ष रूप से बढ़े हैं अपितु भारी कुल आयातों, बाजार में मांग तथा घरेलू उत्पादन के हिस्से के रूप में भी इनमें वृद्धि हुई है ।

छ.9 घरेलू उत्पादन तथा क्षमता उपयोग

93. घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन तथा क्षमता का ब्यौरा निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है :

	अप्रैल 04 से मार्च 05	अप्रैल 05 से मार्च 06	अप्रैल 06 से मार्च 07	जांच अवधि-अक्टू. 06 से सितं. 07
क्षमता (मी.ट.)	44869	55194	95290	104043
वृद्धि	100	123	212	229
उत्पादन (मी.ट.)	37227	51928	84403	99479
वृद्धि	100	139	227	267
क्षमता उपयोग%	82.97%	94.08%	88.57%	95.61%

94. घरेलू उद्योग की क्षमता वर्ष 2004-05 में 44869 मी.टन से बढ़कर जांच अवधि में 102697 मी.टन हो गई, अर्थात् इसमें 59174 मी.टन (129%) की वृद्धि हुई । इसी अवधि के दौरान उत्पादन भी 37227 मी.टन से बढ़कर 99479 मी.टन हो गया, अर्थात् 62252 मी.टन (67%) की वृद्धि हुई । क्षमता उपयोग (वर्धित) आधार वर्ष के दौरान 82.97% से बढ़कर जांच अवधि में 95.61% हो गया । यह स्पष्टीकरण दिया गया है कि उत्पाद की संरचना में परिवर्तन के अनुसार क्षमता में भी परिवर्तन होगा । संबद्ध वस्तुओं की क्षमता विभिन्न कारकों पर निर्भर होती है । उदाहरणार्थ कमतर डोनियर की तुलना में उच्च डोनियर की परिणति अधिकतर उत्पादन में होती है । अतः क्षमता उपयोग घरेलू उद्योग की अप्रयुक्त क्षमता का सही संकेतक नहीं है ।

छ.10 बिक्री

95. घरेलू उद्योग द्वारा की गई बिक्री की मात्रा का ब्यौरा निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है :

	अप्रैल 04 से मार्च 05	अप्रैल 05 से मार्च 06	अप्रैल 06 से मार्च 07	जांच अवधि-अक्टू. 06 से सितं. 07
घरेलू उद्योग की बिक्री	36043	43161	78940	98365
प्रवृत्ति	100	120	219	273
अन्य उत्पादकों की बिक्री	40355	41569	48647	48774
प्रवृत्ति	100	103	124	150

96. आंकड़ों से यह पता चलता है कि आधार वर्ष से जांच अवधि तक मांग में 81033 मी.टन की वृद्धि की तुलना में घरेलू उद्योग की बिक्री में 62322 मी.टन तथा अन्य उत्पादकों की बिक्री में 8420 मी.टन की वृद्धि हुई है। मांग में 83163 मी.टन की वृद्धि की तुलना में घरेलू उद्योग की बिक्री (आबद्ध खपत एवं निर्यात सहित) 71094 मी.टन तथा अन्य उत्पादकों की बिक्री में 8420 मी.टन की वृद्धि हुई है।

97. घरेलू उद्योग की लाभप्रदता, लाभ एवं नकद प्रवाह का ब्यौरा निम्नलिखित तालिका में दिया गया है:-

	अप्रैल 04 से मार्च 05	अप्रैल 05 से मार्च 06	अप्रैल 06 से मार्च 07	जांच अवधि-अक्टू. 06 से सितं. 07
बिक्री लागत	***	***	***	***
लागत रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	100	90	98	93
निवल बिक्री प्राप्ति(लाख रुपए में)	***	***	***	***
एनएसआर रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	100	96.50	99	95
लाभ/हानि/रु.किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	-100	82	-65	-32
लाभ/हानि	***	***	***	***
पीबीआईटी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	-100	5331	7	36
नकद लाभ	***	***	***	***
प्रवृत्ति	100	620	238	454

98. घरेलू उद्योग के आंकड़ों से यह पता चलता है कि आधार वर्ष में 100 की तुलना में जांच अवधि में प्रति इकाई बिक्री लागत घटकर 93 (सूचीबद्ध) हो गई। मूल्य के रूप में बिक्री लागत में 6.36 रु. प्रति किग्रा. की गिरावट आई। इसी अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति आधार वर्ष में 100 की तुलना में घटकर 95 (सूचीबद्ध) हो गई। मूल्य के रूप में बिक्री कीमत में 4.14 रु. प्रति किग्रा. की गिरावट आई। प्रति किग्रा. हानि आधार वर्ष में -100 (सूचीबद्ध) से घटकर जांच अवधि में -32 हो गई।

99. आंकड़ों से यह पता चलता है कि वर्ष 2005-06 को छोड़कर घाटा लगातार बना रहा। तथापि आधार वर्ष से जांच अवधि तक घाटे में गिरावट आई।

100. लाभ संबंधी आंकड़ों से यह पता चलता है कि वर्ष 2005-06 को छोड़कर घाटा लगातार बना रहा। तथापि आधार वर्ष से जांच अवधि तक घाटे में गिरावट आई। पीबीआईटी, जो आधार वर्ष में -100 (सूचीबद्ध) था, जांच अवधि में 36 हो गया।

छ.11 नकद प्रवाह

101. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के दोनों घटक बहु-उत्पाद, बहु स्थानी कंपनियां हैं। किसी भी कंपनी द्वारा विचाराधीन उत्पाद के नकद प्रवाह के बारे में अलग से सूचना नहीं रखी जाती है। अतः प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की नकद लाभ की स्थिति का निर्धारण किया जिससे यह पता चलता है कि आधार वर्ष से जांच अवधि तक नकद लाभ में लगातार सुधार हुआ। सूचीबद्ध रूप में यह आधार वर्ष में 100 की तुलना में जांच अवधि में 454 हो गया।

छ.12 घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले कारक

102. क्षति अवधि के दौरान मूल सीमा शुल्क वर्ष 2004-05 में 20% से घटकर वर्ष 2006-07 में 10% और मार्च, 07 जांच अवधि तक घटकर 7.5% हो गया। वर्ष 2004-05 में आधार वर्ष से बिक्री लागत में जांच अवधि में 6.56 रु./किग्रा. की गिरावट आई। यद्यपि वर्ष 2005-06 तथा 2006-07 में संबद्ध देशों से पहुंच मूल्य में गिरावट आई। तथापि जांच अवधि में इसमें तेजी से गिरावट आई। क्षति अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयातों द्वारा घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में अत्यधिक कटौती हुई।

छ.13 कीमत कटौती

103. संबद्ध देशों से आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रभाव की जांच कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत ह्रास तथा कीमत न्यूनीकरण, यदि कोई हो, के संदर्भ में की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की भारित औसत निवल बिक्री प्राप्ति

(एनएसआर) तथा क्षति रहित कीमत (एनआईपी) (घरेलू उद्योग की लागत सूचना के आधार पर परिकलित) की तुलना संबद्ध देशों से आयातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है।

104. जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु के लिए पाटित आयातों के भारित औसत पहुंच मूल्य और घरेलू बाजार में घरेलू बिक्री कीमत के बीच तुलना की गई है। घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति का निर्धारण करने में करें, घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त रिबेट, छूट तथा कमीशन का समायोजन किया गया है।

105. यह नोट किया गया है कि समूची क्षति अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयातों के कारण कीमत कटौती जारी रही। जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से कटौती 10-25% के बीच रही थी।

कीमत कटौती

	संबद्ध देश			
	अप्रैल 04 से मार्च 05	अप्रैल 05 से मार्च 06	अप्रैल 06 से मार्च 07	जांच अवधि- अक्टू. 06 से सितं. 07
घरेलू उद्योग की औसत निवल बिक्री कीमत	***	***	***	***
पहुंच मूल्य	57133	65414	66986	60959
कटौती	***	***	***	***
कटौती %	***	***	***	***

	संबद्ध देश	चीन	थाइलैंड	वियतनाम
घरेलू उद्योग की औसत निवल बिक्री कीमत	***	***	***	***
पहुंच मूल्य	60960	60320	64530	71890
कटौती की मात्रा	***	***	***	***
कटौती का %	***	***	***	***

छ.14 कम कीमत पर बिक्री

106. प्राधिकारी नोट करते हैं कि कम कीमत पर बिक्री क्षति निर्धारण का एक प्रमुख संकेतक है। कम कीमत पर बिक्री की मात्रा निकालने के लिए क्षति रहित कीमत की गणना कर उसकी तुलना संबद्ध वस्तु के पहुंच मूल्य के साथ की गई है। जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन लागत पर उचित विचार करते हुए घरेलू उत्पादकों के लिए क्षति रहित कीमत का मूल्यांकन किया गया है। विश्लेषण से यह पता चलता है कि संबद्ध

देशों से संबद्ध वस्तु का पहुंच मूल्य जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित क्षति रहित कीमत से काफी कम था। जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के लिए कम कीमत पर बिक्री का मार्जिन 15-30% के बीच रहा था।

कम कीमत पर बिक्री

	संबद्ध देश	चीन जन. गण.	थाइलैण्ड	वियतनाम
एनआईपी	***	***	***	***
पहुंच मूल्य	60960	60320	64530	71890
कम कीमत पर बिक्री	***	***	***	***
कम कीमत पर बिक्री का %	***	***	***	***

छ.15 लगाई गई पूंजी पर आय

107. लगाई गई पूंजी पर आय से संबंधित सूचना निम्नलिखित तालिका में दी गई है:

	अप्रैल 04 से मार्च 05	अप्रैल 05 से मार्च 06	अप्रैल 06 से मार्च 07	जांच अवधि- अक्टू. 06 से सितं. 07
निवल नियत परिसंपत्तियां	***	***	***	***
कार्यशील पूंजी लाख रु.	***	***	***	***
लगाई गई पूंजी लाख रु.	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	194	282	263
पीबीआईटी लाख रु.	***	***	***	***
लगाई गई पूंजी पर आय - एनएफए %	***	***	***	***
सूचीबद्ध	-100	3150	653	1014

108. आंकड़ों से यह पता चलता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में लगाई गई पूंजी में 163% की वृद्धि हुई है। लगाई गई पूंजी में वृद्धि क्षमता व हानि और कार्यशील पूंजी में बढ़ोत्तरी के कारण हुई है। आधार वर्ष से जांच अवधि तक लगाई गई पूंजी पर आय में सुधार हुआ। आधार वर्ष में लगाई गई पूंजी पर जो आय (एनएफए आधार पर) ऋणात्मक थी, वह वर्ष 2005-06 में सकारात्मक हो गई और तत्पश्चात सकारात्मक बनी रही परंतु जांच अवधि में वर्ष 2006-07 में लगाई गई पूंजी पर आय में गिरावट आ गई।

छ.16 रोजगार एवं मजदूरी

109. घरेलू उद्योग के रोजगार एवं मजदूरी के स्तर निम्नलिखित तालिका में दिए गए हैं:

	अप्रैल 04 से मार्च 05	अप्रैल 05 से मार्च 06	अप्रैल 06 से मार्च 07	जांच अवधि-अक्टू. 06 से सितं. 07
कर्मचारियों की सं.	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	119	187	197
मजदूरी कुल (लाख रुपए)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	109	140	168

110. आंकड़ों से यह पता चलता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में कर्मचारियों की संख्या में 97% की वृद्धि हुई। इसी अवधि के दौरान कर्मचारियों की मजदूरी में 67% की वृद्धि हुई।

छ.17 उत्पादकता

111. प्रति कर्मचारी उत्पादन के रूप में प्रदर्शित घरेलू उद्योग की लाभप्रदता निम्नलिखित तालिका में दी गई हैं-

	अप्रैल 04 से मार्च 05	अप्रैल 05 से मार्च 06	अप्रैल 06 से मार्च 07	जांच अवधि-अक्टू. 06 से सितं. 07
उत्पादकता (मी.ट.)	37227	51928	84406	99727
कर्मचारी	***	***	***	***
उत्पादन/कर्मचारी	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	118	122	136

112. आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की उत्पादकता अर्थात् प्रति कर्मचारी उत्पादन में 55% का सुधार हुआ।

छ.18 वृद्धि

113. मांग, क्षमता, उत्पादन एवं बिक्री में सकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित होती है। बिक्री लागत तथा बिक्री कीमत में गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है। लाभप्रदता (प्रति इकाई घाटा) पीबीआईटी तथा लगाई गई पूंजी पर आय में सकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित होती है।

मालसूची

114. घरेलू उद्योग की मालसूची में वृद्धि हुई है जिससे स्पष्ट तौर पर यह पता चलता है कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की बिक्री करने में घरेलू उद्योग को कठिनाई हो रही है।

	अप्रैल 04 से मार्च 05	अप्रैल 05 से मार्च 06	अप्रैल 06 से मार्च 07	जांच अवधि-अक्टू. 06 से सितं. 07
मालसूची औसत स्टॉक (मी.ट.)	***	***	***	***
प्रवृत्ति	100	64	154	307
बिक्री दिवस प्रति दिन	***	***	***	***
बिक्री दिवसों के संबंध में औसत स्टॉक	15.27	8.29	10.68	15.18

छ.19 पूंजी/निवेश जुटाने की क्षमता

115. जांच अवधि के दौरान कम आय को ध्यान में रखते हुए क्षमता में आगे और किसी विस्तार हेतु पूंजी निवेश जुटाने के लिए घरेलू उद्योग की क्षमता व्यवहार्य नहीं है।

छ.20 निष्कर्ष

116. आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान वस्तु के उत्पादन में 167% (62252 मी.टन.) की वृद्धि हुई है। मांग में 173% (81033 मी.ट.) की वृद्धि की तुलना में बिक्री में भी 173% (62322 मी.टन) की वृद्धि हुई है। अन्य उत्पादकों की बिक्री (घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त अनुमान के अनुसार) में भी वृद्धि हुई है। बिक्री सौदों के संबंध में स्टॉक की औसत माल सूची आधार वर्ष में 15 दिन से बढ़कर जांच अवधि में 21 दिन हो गई है। इस अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की मांग में हिस्सा 32.78% से बढ़कर जांच अवधि में 51.44% हो गया है। संबद्ध देशों का हिस्सा 1.46% से बढ़कर जांच अवधि में 20.47% हो गया परंतु संबद्ध देशों से हुए आयातों का हिस्सा 28.88% से तेजी से घटकर 2.36% हो गया। परिणामतः कुल आयातों का हिस्सा 30.34% से घटकर जांच अवधि में 22.83% हो गया। आंकड़ों से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग बिक्री, उत्पादन, क्षमता उपयोग तथा मांग में हिस्से में वृद्धि कर मांग में बढ़ोत्तरी का लाभ उठाने में समर्थ रहा है।

117. बिक्री लागत आधार वर्ष में 100 (सूचीबद्ध) से घटकर जांच अवधि में 93 हो गई अर्थात् 6.36 रु. प्रति कि.ग्रा. की गिरावट आई लेकिन बिक्री कीमत घटकर 95 (सूचीबद्ध) हो गई अर्थात् 4.14 रु. प्रति किग्रा. की कम आई। आधार वर्ष में घरेलू उद्योग को घाटा (प्रति इकाई) हो रहा था और उसे वर्ष 2005-06 को छोड़कर जब उसे लाभ हुआ था, क्षति अवधि के दौरान घाटा जारी रहा। प्रति इकाई घाटा आधार वर्ष में -100 से घटकर जांच अवधि में -24 (सूचीबद्ध) हो गया। तथापि पीबीआईटी वर्ष 2005-06 और उससे आगे सकारात्मक हो

गया । लगाई गई पूंजी पर आय भी वर्ष 2005-06 में सकारात्मक हो गई लेकिन इसमें वर्ष 2006-07 में तेजी से गिरावट आई और जांच अवधि में मामूली सुधार हुआ । तथापि आरओआई कम बनी रही ।

छ.21 कारणात्मक संबंध और अन्य कारक

पाटित कीमतों पर न बेचे गए आयातों की मात्रा एवं कीमतें

118. पूर्वोक्त पैराग्राफों में आयातों के दिए गए ब्यौरों से यह स्पष्ट हो जाता है कि जांच अवधि के दौरान चीन, इंडोनेशिया, कोरिया, थाइलैण्ड तथा वियतनाम से भिन्न स्रोतों से संबद्ध वस्तुओं का आयात न्यूनतम सीमा से कम रहा है। इंडोनेशिया और कोरिया से आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लागू है । अतः केवल संबद्ध देशों से आयात पाटित कीमतों पर किए जा रहे हैं और वे न्यूनतम सीमा से अधिक रहे हैं जिससे घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है ।

विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों का व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार और उनके बीच प्रतिस्पर्धा

119. प्राधिकारी को घरेलू उद्योग या किसी अन्य भारतीय उत्पादक द्वारा अपनाए गए किसी व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार का पता नहीं चला है ।

मांग में संकुचन अथवा खपत की पद्धति में परिवर्तन

120. यह नोट किया जाता है कि जांच अवधि के दौरान मांग में कोई कमी नहीं आई है । इसके विपरीत क्षति अवधि के दौरान समग्र मांग में 74% की वृद्धि हुई है । अतः मांग में संभावित कमी ऐसा कोई कारक नहीं है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती हो ।

घरेलू उद्योग का प्रौद्योगिकी विकास, निर्यात निष्पादन और घरेलू उद्योग की उत्पादकता

121. किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने इस आशय का कोई तर्क नहीं दिया है कि इन कारकों से घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है । इसके अलावा, जांच से यह पता नहीं चला है कि संबद्ध वस्तु के उत्पादन की प्रौद्योगिकी में कोई खास परिवर्तन हुआ है । घरेलू उद्योग ने वर्ष 2002-03 को छोड़कर न तो पर्याप्त निर्यात किया है और न ही घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन में गिरावट आई है । वस्तुतः वर्ष 2002-03 के बाद घरेलू उद्योग के निर्यातों में वर्ष 2003-04 में पर्याप्त गिरावट आई और तत्पश्चात उनमें वृद्धि हुई ।

छ.22 कारणात्मक संबंध

122. संबद्ध वस्तु पर इंडोनेशिया, कोरिया आरओके, मलेशिया और चीनी ताइपेई से हुए आयातों पर वर्ष 2006 में पाटनरोधी शुल्क लगाया गया था । इन देशों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद आयातों में अत्यधिक गिरावट आई थी लेकिन अन्य देशों से आयातों में

भारी वृद्धि हुई थी । जांच अवधि में संबद्ध देशों ने कुल आयातों के 89.64% पर कब्जा कर लिया है । संबद्ध देशों से हुए आयातों के कारण कीमत कटौती 10-25% के बीच और कम कीमत पर बिक्री 18-30% के बीच हुई जिससे यह पता चलता है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों द्वारा घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत दबाव में बनी रही । परिणामतः लाभप्रदता एवं लाभ में वर्ष 2006-07 में हुआ सुधार बरकरार नहीं रह सका और निष्पादन में वर्ष 2005-06 तथा जांच अवधि में गिरावट आनी शुरू हो गई । आधार वर्ष की तुलना में लाभ (पीबीआईटी) में सुधार हुआ लेकिन लगाई गई पूंजी पर आय वर्ष 2005-06 में सकारात्मक होने के बाद गिरावट में तब्दील हो गई । लगाई गई पूंजी पर आय कम बनी रही ।

123. घरेलू उद्योग ने अपने उत्पादन, बिक्री तथा क्षमता उपयोग में वृद्धि कर बाजार हिस्सा प्राप्त करना जारी रखा लेकिन इन्हीं देशों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद मात्रा में आए सुधार से वित्तीय निष्पादन में सुधार नहीं हो सका । वर्ष 2005-06 को छोड़कर प्रति इकाई घाटा जारी रहा । इसी प्रकार वर्ष 2005-06 को छोड़कर, जब आरओआई में सुधार हुआ था, यह भी कम बनी रही ।

124. उपर्युक्त विश्लेषण से यह पता चलता है कि संबद्ध देशों से हुए आयातों द्वारा घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में कटौती के रूप में उसके निष्पादन पर दबाव बना रहा जिससे पाटित आयातों और घरेलू उद्योग के निष्पादन के बीच कारणात्मक संबद्ध का पता चलता है ।

ज. निष्कर्ष

125. प्राधिकारी पूर्वोक्त पर विचार करने के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि:

- क. संबद्ध देश से भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात उसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है;
- ख. घरेलू उद्योग को इससे वास्तविक क्षति हुई है;
- ग. यह क्षति संबद्ध देशों से होने वाले पाटित आयातों के कारण हुई है ।

झ. भारतीय उद्योग का हित एवं अन्य मुद्दे

126. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य सामान्य तौर पर ऐसे पाटन को समाप्त करना है जिससे भारतीय उद्योग को क्षति हो रही है तथा भारतीय बाजार में ऐसी खुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की पुनः स्थिति लाना है जो कि देश के सामान्य हित में है । पाटनरोधी उपाय लागू करने से संबद्ध देशों से होने वाले आयात किसी भी प्रकार कम नहीं होंगे और इस प्रकार उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता पर कोई असर नहीं पड़ेगा ।

ट. सिफारिशें

127. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यह आवश्यक समझते हैं और संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों पर निम्नलिखित स्वरूप और तरीके से अनंतिम पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करते हैं ।

128. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क संबंधी नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन या क्षति मार्जिन, जो भी कम हो, के बराबर पाटनरोधी शुल्क की निर्धारित राशि वसूल करने का प्रस्ताव करते हैं । तदनुसार संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से निम्नांकित तालिका के कालम 9 में उल्लिखित राशि के बराबर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की जाती है ।

शुल्क तालिका

क्र.सं.	टैरिफ मद	वस्तु का वर्णन	विनिर्देशन	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	घनराशि	माप की इकाई	मुद्रा
1	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1	5402.47	सभी पूर्णतः ड्रॉन या पूर्णतः ओरिएन्टेड यार्न/स्पिन ड्रॉ यार्न/फ्लैट यार्न (नॉन टेक्सचर्ड और नॉन- पीओवाई) और अन्य यार्न		चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	टॉंगकुन ग्रुप कं.लि.	टॉंगकुन ग्रुप कं.लि.	200.53	मी.ट.	अम. डॉ.
2	-वही-	-वही-		चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	टॉंगकुन ग्रुप हेंगशेंग केमिकल फाइबर कं.लि.	टॉंगकुन ग्रुप हेंगशेंग केमिकल फाइबर कं.लि.	225.52	मी.ट.	अम. डॉ.
3	-वही-	-वही-		चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	बुक्सी गॉडशिप इंडस्ट्री एंड ट्रेड कं. लि.	जियानसू गॉडशिप केमिकल फाइबर कं.लि.	275.42	मी.ट.	अम. डॉ.
4	-वही-	-वही-		चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	जियानसू हेंगली केमिकल्स फाइबर कं. लि.	जियानसू हेंगली केमिकल फाइबर कं.लि.	112.64	मी.ट.	अम. डॉ.
5	-वही-	-वही-		चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	उपर्युक्त क्र.सं. 1 से 4 में उल्लिखित संयोजन से भिन्न कोई		527.31		मी.ट.
6	-वही-	-वही-		चीन जन.गण.	चीन जन.गण. से भिन्न कोई	कोई	कोई	527.31	मी.ट.	अम. डॉ.

7	-वही-	-वही-		संबद्ध देशों से भिन्न कोई	चीन जन.गण.	कोई	कोई	527.31	मी.ट.	अम. डॉ.
8	-वही-	-वही-		वियतनाम	वियतनाम	कोई	कोई	232.86	मी.ट.	अम. डॉ.
9	-वही-	-वही-		वियतनाम	वियतनाम से भिन्न कोई	कोई	कोई	232.86	मी.ट.	अम. डॉ.
10	-वही-	-वही-		संबद्ध देशों से भिन्न कोई	वियतनाम	कोई	कोई	232.86	मी.ट.	अम. डॉ.
11	-वही-	-वही-		थाइलैंड	थाइलैंड	इंडो पॉली (थाइलैंड) लि.	इंडो पॉली (थाइलैंड) लि.	283.21	मी.ट.	अम. डॉ.
12	-वही-	-वही-		थाइलैंड	थाइलैंड	उपर्युक्त क्र.सं. 11 में उल्लिखित संयोजन से भिन्न कोई		379.74	मी.ट.	अम. डॉ.
13	-वही-	-वही-		थाइलैंड	थाइलैंड से भिन्न कोई	कोई	कोई	379.74	मी.ट.	अम. डॉ.
14	-वही-	-वही-		संबद्ध देशों से भिन्न कोई	थाइलैंड	कोई	कोई	379.74	किग्रा.	रु.

ठ. आगे की प्रक्रिया

129. प्रारंभिक जांच परिणामों को अधिसूचित करने के बाद निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जाएगी:-

- (क) प्राधिकारी सभी हितबद्ध पक्षों से इन जांच परिणामों पर टिप्पणियां आमंत्रित करेंगे और उन पर अंतिम जांच परिणामों में विचार किया जाएगा;
- (ख) प्राधिकारी द्वारा ज्ञात निर्यातकों, आयातकों, याचिकाकर्ता तथा अन्य हितबद्ध पक्षों को अलग से लिखा जा रहा है जो प्रारंभिक जांच परिणामों की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचार प्रस्तुत कर सकते हैं । कोई अन्य हितबद्ध पक्ष भी अपने विचार इन जांच परिणामों के प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के भीतर प्रस्तुत कर सकता है ।
- (ग) प्राधिकारी आवश्यक समझी गई सीमा तक आगे सत्यापन करेंगे ।
- (घ) प्राधिकारी अंतिम जांच परिणामों की घोषणा करने से पहले आवश्यक तथ्यों को प्रकट करेंगे ।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 23rd January, 2009

Preliminary Findings

Sub : Anti-Dumping Investigation concerning imports All Fully Drawn or Fully Oriented Yarn/Spin Draw Yarn/Flat Yarn of Polyester (non-textured and non-POY) and other yarns of originating in or exported from China PR, Thailand and Vietnam.

No. 14/3/2008-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (hereinafter referred to as AD Rules), thereof :

A. BACKGROUND AND PROCEDURE

2. i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received an application filed by the Association of Synthetic Fibre Industry, (Applicant) on behalf of the domestic industry, alleging dumping All Fully Drawn or Fully Oriented Yarn / Spin Draw Yarn / Flat Yarn of Polyester (non-textured and non-POY) and other yarns (hereinafter refer to as subject goods) originating in or exported from China PR, Thailand and Vietnam (hereinafter referred to as subject countries).
- ii) The Authority on the basis of evidence submitted by the applicant found it appropriate to initiate the investigation concerning imports of subject goods originating in/or exported from China PR, Thailand and Vietnam. The authority notified the Embassies of subject countries in New Delhi about the receipt of dumping allegation before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-Rule 5(5) of the Rules.
- iii) The Authority issued a public notice dated 6.5.08 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping investigations concerning imports of the subject goods classified under Chapter 54 of Schedule I of the Customs Tariff Act, 1975 originating in or exported from subject countries.
- iv) The Authority forwarded a copy of the public notice to the known exporters (whose names and addresses were available with the authority) and gave them opportunity to make their views known in writing within forty days from the date of issue of the letter in accordance with the Rule 6(2).
- v) The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known importers (whose names and addresses were available with the authority) of subject goods in India and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of issue of the letter in accordance with the Rule 6(2).

- vi) Request were made to Director General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S), Kolkata to arrange details of imports of subject goods made in India for the period of investigation and preceding three years. However the transaction wise detail were not available with DGCIS under the Custom Heading 54.02.
- vii) The Authority provided copies of the non confidential version of the application to the known exporters and the Embassies of subject countries in accordance with Rules 6(3) supra. A copy of the non-confidential application was also provided to other interested parties, wherever requested.
- viii) The Authority sent a questionnaire to elicit relevant information to the known exporters/producers, in accordance with the Rule 6(4).
- ix) Exporters, producers and other interested parties who have not responded and not supplied information in this investigation have been treated as non-cooperating interested parties.
- x) A Market Economy Treatment (MET) questionnaire was forwarded to all the known exporters and Embassies of China PR and Vietnam. While for the purpose of initiation the normal value in China PR and Vietnam was considered based on the constructed cost of production of the subject goods in China PR and Vietnam, the Authority informed known exporters that it proposes to examine the claim of the applicant in the light of para 7 and para 8 of Annexure I of Anti Dumping Rules, as amended. The exporters/producers of the subject goods from China PR and Vietnam were therefore requested to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 to enable the Authority to consider whether market economy treatment be granted to cooperative exporters/producers.
- xi) Importers/users who have not provided information in this investigation have been treated as non-cooperating interested parties.
- xiii) Information regarding injury was sought from the applicant and other domestic producers also.
- xvi) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties as per Rule 6(7).
- xvii) Cost investigations were conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the applicant so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry.
- xviii) In compliance of decision of Supreme Court in Civil Appeal No.1294 of 2001, the normal values for subject countries have been determined.
- xix) *** in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

- xx) Investigation was carried out for the period starting from 1st September 2006 to 30th October 2007 (12 months) i.e. the period of investigation (POI). The examination of trends in the context of injury analysis covered the period from April 2004 - March 2005, April 2005 – March 2006, April 2006 – March 2007 and the POI.

B. Product under consideration and like Article

3. All Fully Drawn or Fully Oriented Yarn / Spin Draw Yarn / Flat Yarn of Polyester (non-textured and non-POY) and other yarns conforming to the tariff description of Customs Heading 5402.47
4. The product in commercial market parlance is generally known as 'Fully Drawn Yarn'. The subject goods are used for manufacture of apparel / household textiles, and other industrial textiles.
5. Technical specifications of the subject goods are defined in terms of their deniers, tenacities, lustres, colours (like semi dull, bright, super bright, full dull, Dope dyed), cross section and shrinkage.
6. The subject goods are classified under Chapter 54 of the Custom Tariffs, Act, 1995 under Customs sub heading 5402 47.
7. It has been submitted that the subject goods, which are being dumped into India, are identical to the goods produced by the domestic industry. There are no differences either in the technical specifications, quality, functions or end-uses of the dumped imports and the domestically produced goods. Hence, the goods produced by the domestic industry are 'Like Article' to dumped goods from subject countries. There is no difference in the dumped goods and the product under consideration manufactured by the applicants. The two are technically and commercially substitutable and hence should be treated as 'like articles' under the Anti Dumping Rules.
8. M/s Thai Polyster Company Ltd. (TPC) submitted that TPC exported mainly the so-called premium grade FDY or SDY (Mono), 20 denier, 1 filament, semi-dull luster, to India during the period of investigation. It has been stated that large Indian domestic producers produced and sold only the non premium SDY grades in the domestic market. Although TPC's export product is classified as Man Made Filaments under Chapter 54 with the sub-heading of 5402-47-00 stipulated under the petition, the product sold by TPC is in fact not the same product type which is largely sold by the Indian domestic industry who claimed for the effecting injury. In order to produce the premium grade FDY, the producers have to use new technology to produce innovative premium grade. As a result, the prices of premium grade FDY are normally higher than those of low grade quality normally produced and sold in typical Indian market. Since the domestic producers in India have not yet produced premium grade FDY, the demand of the SDY (Mono) in Indian market outstrips the supply. Therefore, SDY (mono) product should not be conceivably classified as the subject goods exporting from Thailand, which cause intrinsically injurious effect to the domestic industry under this investigation.

9. The authority notes that the statement of TPC has not been substantiated with any subsequent evidence. Other co-operating exporters and other interested parties have not raised any issue in this regard, the authority has, therefore, treated the goods produced by the domestic industry as 'Like Article' to dumped goods from subject countries.

C Standing of the applicant and Domestic industry

10. Authority notes that the application has been filed by the Association of Synthetic Fibre Industry on behalf of the Indian domestic industry. Data has been submitted by Reliance Industries Ltd., Nova Petrochemicals Ltd., Gupta Synthetics Ltd. and Chiripal Petrochemicals Ltd. The application was supported by M/s Century Enka Ltd., M/s Indorama Synthetics (I) Ltd., M/s Paras Petrofils Ltd., M/s Garden Silk Mills Ltd., JBF Industries Ltd. and M/s Welspun Syntax Ltd. These producers account for 85% of the Indian production and thus have desired standing. The companies providing data account for 68% of total production, therefore constitute domestic industry within the meaning of the Rule 2(b).

D. Confidentiality

11. In the preliminary findings the data of the domestic industry concerning capacity, production and sales etc. have not been kept confidential, however the information concerning customers, prices and costs have been considered confidential. The other interested parties may offer their comments in this regard.

12. The confidentiality claims of the cooperating exporters are under examination, however for the purpose of preliminary findings the data submitted by exporters as confidential have been considered confidential. The interested parties may offer their comments on the claims of exporters.

E. Other issues

E.1 PCN wise information from domestic industry.

13. It has been contended by JIANGSU HENGLI CHEMICALS FIBRE CO.LTD that the logic of having PCN-based determination of dumping is that there is a vast variation within the category of the product under consideration in terms of grades, qualities and prices. In absence of PCN-wise cost and price information, the determination of normal value and export prices would be completely skewed. For example, if in the market in the country of origin of the exporter, the exporter was selling only the least expensive grades/qualities but exports to India were of the higher quality/more expensive grades, the Designated Authority would be forced to come to the conclusion that there is no dumping at all. Similarly there is every possibility that the Domestic Industry may not be injured in respect of those PCNs which have been exported by Jiansu Hengli or other exporters as well. Therefore, the entire investigation, both on the side of the domestic industry and the exporters, needs to be based on PCN-wise cost and price information.

14. The domestic industry in this regard stated that the PCN -wise information is required from the exporters to determine the dumping margin appropriately. The basis of PCN -wise analysis is emanating from Article 2.4 of WTO Agreement on Anti Dumping which is meant only for dumping margin analysis. It has also been stated that the exporter in their submission has also acknowledged the need of PCN-wise data for the normal value, export price and dumping margin. Therefore, it is neither permissible nor envisaged to extend the concept of PCN wise analysis to any issue other than dumping margin. The concept of model wise or PCN wise analysis is limited in law to the dumping margin under Article 2.4. At the same time paragraph (vi) of Annexure II of the anti dumping Rule which would confirm that the analysis and the requirements of injury analysis of the Domestic Industry are quite different from the mandate of Article 2.4 (or paragraph 6 of Annexure I of the Anti Dumping Rules). With regard to maintenance of cost records it has been submitted that the companies are indeed maintaining the cost records as required under the Company Act. However, the domestic industry is neither required nor is it maintaining or keeping the cost records at the PCN level.

15. The Authority note that for injury analysis, the legal parameters do not require segregated information in respect of different variation of the like article. However, for determination of dumping margin the comparison of different specification of the product would lead to unfair results, therefore comparison is to be made PCN wise. In pursuance of lesser duty rule as being practised in India and consequently the determination of injury margin it would be desirable to have separate cost of production to calculate accurate non injurious price (NIP), however, if the information is not maintained by domestic industry, the calculation has to be based on available authentic information. NIP so calculated may be imperfect, the Authority however notes that anti dumping duty in no case would exceed the value of dumping margin.

F Methodology For Dumping Margin Determination

F.1 Submission made by domestic industry

16. It has been submitted that the subject countries namely China and Vietnam are non-market economy countries under the Indian Anti-dumping Rules. Therefore, the normal value in case of China and Vietnam is required to be determined as per the procedure described in the para 7 of the Annexure I to the Anti-dumping Rules.

17. It has been submitted that for the purpose of determination of normal value in case of a non-market economy country, an appropriate third market economy country is required to be selected as the first alternative. It was proposed Chinese Taipei be taken as an appropriate market economy third country. It has been submitted that the capacity in China and Vietnam for manufacturing the subject goods is close to the manufacturing facility in Chinese Taipei. It has also been submitted that Taiwan be taken as a surrogate country in view of the fact that the industry structure, the average capacity of plants, the cost structure, the production process and the technology are reasonably and fairly close to that found in the subject countries. The domestic industry also has no links or

relationship with any of the producers in Taiwan. This proposition is also guided by the fact that Taiwan is a market economy country with considerable competition within the local producers as well as from imported goods. Such conditions are a good indicator of market determined prices.

18. It was further submitted that Domestic Industry tried to get the information on export price details from Taiwan to other countries, however, was not able to get any documentary evidence or reliable information with regard to prices in Taiwan as such information is not available in public domain. For the purpose of initiation, the normal value in Taiwan was constructed, as this is one of the permissible methods under the first set of alternatives in terms of the provisions of paragraph 7 of Annexure I of the Anti-dumping Rules.

F.2 Market Economy Treatment for Cooperating Exporters

19. At the stage of initiation, the Authority proceeded with the presumption by treating China PR and Vietnam as a non-market economy countries as per para 8(2) of Annexure I of the Rules, for purposes of an anti dumping investigation. Upon initiation, the Authority advised the producers/Exporters in these countries to respond to the notice of initiation and provide information relevant to determination of their market economy status.

20. The Authority sent copies of the MET questionnaire to all the known exporters for rebutting presumption of non market economy in accordance with criteria laid down in para 8(3) of Annexure-I to the Rules. The Authority also requested Government of China PR and Vietnam to advise producers/exporters in their countries to provide information.

F.3 Submissions by NM/s Jiangsu Hengli Chemicals Fibre Co. Ltd., China PR.

21. It has been stated that the domestic industry has made the following allegations:

- a) China is a Non-Market Economy;
- b) In the past the Designated Authority has treated China as a Non-Market Economy. Therefore the country should be treated as a Non-market Economy.
- c) The Normal Value in respect of exporters from China needs to be constructed.

22. It has also been stated that it is an established position of trade law that even if a country is being treated as a Non-Market Economy, a company can be accorded Market Economy treatment, provided it fulfils the parameters set for the determination of market economy. It is a matter of record that the DGAD itself has granted market economy treatment to many Chinese companies in the past four years. Further it has been stated that under the Indian Law not only set out

four criteria in general that are to be considered by the Designated Authority for Market Economy Status, but also the conditions for consideration of such criteria. Specifically, the terms, such as "significant State interference", "substantially reflect", "significant distortions", "sufficient evidence", "market conditions prevail". Etc. are the conditions which shall be taken into account by the Designated Authority in measuring and applying the criteria for MES. It has been submitted that the Designated Authority should apply the rules under Indian Law, dealing with market Economy Treatment to a cooperating exporter from a designated Non-Market Economy country, only if it is established that there is significant State interference affecting cost and pricing of the subject material and the costs of major inputs substantially reflect market value. In such investigation, emphasis is to be given on significant State interference, as no where in the world can an enterprise work without State interference, in one form or the other.

23. It has also been submitted that M/s Jiangusu Hengli Chemical Fibre Co. Ltd., China PR was founded in 2002 as a stock holding company with a registered capital of US\$ ** million. Its main business comprises manufacturing and selling of Polyester Fibre and Differential Chemical Fibre.

24. M/s Jiansu Hengli Chemical Fibre Co. Ltd., is owned by the following companies:

1. Suzhou Shenglun Investment Co. Ltd.,
2. Suzhou Huaer Investment Co. Ltd.,
3. Tak Shing Li International Holdings Ltd.

All these shareholders of the company are neither state owned nor do they have any direct or indirect relation with the State. It has been further submitted that in accordance with the Anti-Dumping Rules of India, even erstwhile state owned company which have been transferred to private individuals in a fair manner are not barred from claiming Market Economy Status if they are able to establish that they are operating under a Market Economy System. In the past the Hon'ble Designated Authority has accorded market Economy Status to number of such companies. On the contrary, Jiangsu Hengli is a totally privately established and owned by private companies. Hence Jiangsu Hengli needs to be accorded market Economy Status by the Hon'ble Designated Authority.

25. The Authority noted that the exporter was established by Yun Chun Holdings Limited as a wholly foreign owned enterprise in 2002 in Hongkong. In the same year 75% of the shares was transferred to Wujiang Chemical Fibre Weaving Factory. Subsequently balance shares were transferred to Yun Chun Holdings Limited and Hong Kong Tak Shing International Holding Limited. In 2007 Wujiang Chemical Fibre Weaving Factory transferred all its shares to Suzhou Shenlun Investment Co. Ltd. and Suzhou Huaer Investment Co. Ltd..

26. The exporter was asked to provide the annual Reports indicating activities and Balance sheet of the Holding companies. The exporter was also asked to explain about the method of valuation of shares and mode of payment. In reply it was stated that the two of the present holding companies were established in 2007, therefore no Annual Reports are available, however the Annual Reports and Balance Sheets for Hong Kong Tak Shing International Holding Limited. were provided. It has also been stated that *"while transferring shares the*

31. In view of the above, it is not possible at this stage to ascertain true nature of group company mentioned above. Therefore the authority is not

granting market economy status to the exporter for the purpose of preliminary findings.

F. 5 TONGKUN GROUP CO. LTD.(TONGKUN GROUP) AND TONGKUN GROUP HENGSHENG CHEMICAL FIBRE CO.LTD. (HENGSHENG)

32. It has been submitted that Hengsheng has only **** shareholder i.e. ***** Ltd. In respect of ***** it has been submitted that it has *** share holders .The major shareholders of the Tongkun Groups are ***** Ltd., *****Ltd., *****Ltd., and ***** Ltd., in addition to individual shareholders.

33. These exporters were asked to provide Annual Reports indicating activities and Balance Sheets of ***** Ltd., *****Ltd., *****Ltd., and ***** Ltd., (holding companies for exporters) for POI in previous years. It was also asked whether holding companies are /were owned/controlled or any share is/were held by State. In reply the Balance Sheets and Income Statements for these holding companies have been submitted. The information provided in Balance Sheets and Income Statement is inadequate and does not throw any light on the activities of these holding companies.

34. In view of the inadequate information about the activities of the holding companies and their shareholders it is not possible at this stage to ascertain true nature of group companies mentioned above. Therefore the authority is not granting market economy status to the exporters for the purpose of preliminary findings.

F.6 Normal Value

F.7 Normal Value for China PR

35. In anti-dumping investigations concerning imports originating in non-market economy normal value is to be determined in accordance with para 7 of Annexure I of the AD Rules. The Authority notes that para 7 of Annexure 1 of AD Rules provide that:

"In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis of the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin."

36. As explained above, the market economy status has not been accorded any of the co-operating exporters. Therefore the normal value has been determined in accordance with para 7 of annexure I of the Rules. The domestic industry at the time of application has proposed Chinese Taipei as a surrogate country for determination of normal value, however no information was made available to the authority. In the responses by the cooperating exporters as well no comment has been provided about the Chinese Taipei as an "appropriate market economy third country". The authority has therefore determined the normal value in accordance with method "any other reasonable basis".

37. For the purpose of calculating the normal value the prices of raw materials to India, consumption norm and conversion cost of the efficient producer of the domestic industry have been taken into account. A profit @ 5% has been added to arrive at the normal value. By this methodology the normal value has been determined as \$*** /kg.

F.8 Export Price for Cooperating Exporters

F.9 Jiangsu Hengli Chemical Fibre Co.Ltd.

38. The exporter has provided transaction wise details of exports to India during the period of investigation. For the purpose of preliminary findings all transactions of exports have been taken into consideration for determination of export price. The expenses incurred on account of local transportation, packing, overseas freight, insurance, custom clearance, handling and other expenses claimed by exporter have been adjusted to arrive at ex-factory export price. By this methodology the ex-factory weighted average export price has been determined as \$*** /kg.

F.10 TONGKUN GROUP CO.LTD.

39. The exporter has provided transaction wise details of exports to India during the period of investigation. For the purpose of preliminary findings all transactions of exports have been taken into consideration for determination of export price. The expenses incurred on account of packing, overseas freight, insurance, Port fee and bank expenses claimed by exporter have been adjusted to arrive at ex-factory export price. By this methodology the ex-factory weighted average export price has been determined as \$*** /kg.

F.11 TONGKUN GROUP HENGSHENG CHEMICAL FIBRE CO.LTD

40. The exporter has provided transaction wise details of exports to India during the period of investigation. For the purpose of preliminary findings all transactions of exports have been taken into consideration for determination of

export price. The expenses incurred on account of packing, overseas freight, insurance, Port fee and bank expenses claimed by exporter have been adjusted to arrive at ex-factory export price. By this methodology the ex-factory weighted average export price has been determined as \$*** /kg.

F.12 WUXI GODSHEEP INDUSTRY & TRADE CO.LTD.

41. It has been stated by exporters that the goods manufactured by its related Co.Jiangsu Godsheel Chemical Fiber Co. Ltd. was exported to India during the period of investigation. In this regard, the exporter has provided transaction wise details of exports to India during the period of investigation. For the purpose of preliminary findings all transactions of exports have been taken into consideration for determination of export price. The expenses incurred on account of commission, local transportation, overseas freight, insurance, handling and bank expenses claimed by exporter have been adjusted to arrive at ex-factory export price. By this methodology the ex-factory weighted average export price has been determined as \$*** /kg.

F.13 Export price for Non-cooperating Exporter

42. To determine the export price from non cooperating exporters details of the transaction wise export made to India by Immortal Computer lab Pvt. Ltd. have been taken into account. As the transactions are on CIF basis therefore to determine ex factory export price, the expenses incurred on account of export to India have been adjusted. For this purpose the expenses declared by the cooperating exporter had been taken into account and adjusted. By this methodology the ex-factory export price has been determined as \$*** /kg.

F. 15 Vietnam

F. 16 Normal Value for Vietnam

43. From Vietnam Farnosa Industries Corporation has responded and provided information to rebut the presumption of non market economy under para 8(2) of annexure I of the Rules. During the examination it was noticed that the exporter has transacted the business with India through a trader in the other country. As no information has been provided about the detail of export transactions to India by trader, therefore, it is not possible to complete the chain of transactions to India. For the purpose of preliminary findings no separate dumping margin has been determined for the cooperating producer/exporter. The authority would examine the matter further after preliminary findings to check whether it is possible to complete the chain of export transactions by taking into account evidence to be submitted by the exporter in this regard.

44. For the purpose of preliminary findings, the Vietnam has been considered as non market economy and normal value has been determined in accordance with para 7 of the annexure I of the Rules. The domestic industry at the time of application has proposed Chinese Tapei as a surrogate country for determination of normal value, however no information was made available to the authority. In the responses by the cooperating exporters as well no comment has been provided about the Chinese Tapei as an "appropriate market economy third country". The authority has therefore determined the normal value in accordance with method "any other reasonable basis".

45. For the purpose of calculating the normal value the prices of raw materials to India, consumption norm and conversion cost of the efficient producer of the domestic industry have been taken into account. A profit @ 5% has been added to arrive at the normal value. By this methodology the normal value has been determined as \$*** /kg.

F.17 Export price for Non-cooperating Exporters

46. To determine the export price from non cooperating exporters details of the transaction wise export made to India by Immortal Computer lab Pvt. Ltd. have been taken into account. As the transactions are on CIF basis therefore to determine ex factory export price, the expenses incurred on account of export to India have been adjusted. For this purpose the expenses declared by the exporter had been taken into account and adjusted. In respect of freight and insurance no information was made available by exporter, therefore information provided by domestic industry has been relied on for adjustment. By this methodology the ex-factory export price has been determined as \$ *** /kg.

F.18 Thailand

47. M/s Thai Polyester Co. Ltd., responded to the initiation of notification and provided the detail about the domestic and export sale transactions. During the examination it was noticed that the business to India has been transacted through a trader in another country. The exporters stated that the prices to trader may be taken as export price to India, however no details of export price to India by trader were provided. As the chain of transactions to India were not fully established, therefore, separate dumping margin for this exporter has not been determined for the purpose of preliminary findings. The authority would examine the matter further after preliminary findings to check whether it is possible to complete the chain of export transactions by taking into account evidence to be submitted by the exporter in this regard.

F.19 Submissions made by Indopoly (Thailand) Ltd.

48. There are no differences in the goods sold in the home market and goods exported to India. The SDY produced is categorized into two gradations which are A quality and PQ Quality. The latter products (PQ grade) are mostly shipped to India and domestic markets and are without any dyeing guarantees and they are produced from a lower graded raw material and utilized, reused packing material and lubricants. It was further clarified that during the production process by use of downgraded PTA and MEG, PQ grade of SDY are produced. The cost of downgraded raw materials is comparatively lower.

49. On perusal of data of the exporters, it have been noted that a very high percentage of lower grade are shown to have been sold, and mainly the same shown to have been sold to India. To India, it has been claimed that all sales were of PQ grade however some sample invoices indicate that the sale relate to A quality. The authority also notes that domestic industry has stated that a very low percentage of unintended lower quality products are produced because of changes in controlled parameters in the production process. The authority shall further examine the contention of the exporter by referring to further evidence and actual records of the company. For the purpose of the preliminary findings the dumping margin has been determined by disregarding the difference in quality.

F.20 Normal value for Thailand

50. The exporter has provided transaction wise details of domestic sale for the purpose of determination of normal value. All transactions have been taken into consideration to calculate weighted average PCN wise normal value. To determine the normal value at the ex-factory level, the exporter has provided details of expenses incurred in making sale and same have been taken into account. The expenses on account of credit cost, commission, freight, handling, insurance and CTS expenses have been adjusted to determine PCN wise weighted average normal value. By this methodology the weighted average normal value has been calculated as \$*** /kg.

F.21 Export Price for Cooperating Exporters**F.22 INDO POLY (THAILAND) LTD.**

51. The exporter has provided transaction wise details of exports to India during the period of investigation. For the purpose of preliminary finding all transactions of exports except transactions made through trader of other countries have been taken into consideration for determination of export price.

52. The expenses incurred on account of local transportation, overseas freight, insurance and other expenses claimed by exporter have been adjusted to arrive at ex-factory export price. By this methodology the ex-factory weighted average export price has been determined as \$*** /kg

F. Net price for non-cooperating Exporters.

5. To determine the export price from non cooperating exporters details of transactions with export made to India by Immortal Computer lab Pvt. Ltd. have been taken into account. As the transactions are on CIF basis therefore to determine ex-factory export price, the expenses incurred on account of export to India have been adjusted. For this purpose the expenses declared by the cooperating exporter had been taken into account and adjusted. By this methodology the ex-factory export price has been determined as \$ ***/kg.

F. Dumping Margin

54. Based on the normal value and export price as determined above, dumping margin determined are as under:

	NV	EP	DM	DM%
Cooperating Exporters	***	***	***	
GROUP	***	***	***	13.74
Cooperating Exporters	***	***	***	
GROUP	***	***	***	15.72
Cooperating Exporters	***	***	***	
GROUP	***	***	***	19.89
Cooperating Exporters	***	***	***	
GROUP	***	***	***	7.28
Cooperating Exporters	***	***	***	
GROUP	***	***	***	46.55
Cooperating Exporters	***	***	***	
GROUP	***	***	***	16.32
Cooperating Exporters	***	***	***	
GROUP	***	***	***	23.78
Cooperating Exporters	***	***	***	
GROUP	***	***	***	34.69

The above determined dumped margin is more than *de minimis*.

G. METHODOLOGY FOR INJURY DETERMINATION AND EXAMINATION OF CAUSAL LINK

G.1 View of the domestic industry

The domestic industry made the following submissions:-

55. The share of imports from the subject countries has increased from 4.83% in April 04-March 05 to 89.64% during the period of investigation. It may also be seen that during the POI, imports from the subject countries have increased to almost 24 times of the imports for the year April 04-March 05. It clearly indicates that the imports from subject countries have been able to capture a higher market share due to aggressive policy of price undercutting adopted by the exporters from the subject countries.
56. Further, imports from the subject countries in comparison to the total demand in India have increased from 1.45% during April 04-March 05 to 20.37 % during the period of investigation.
57. The imports from subject countries as percentage of domestic production of the petitioners have increased from a level of 4.33% in the year April 04-March 05 to 39.24% during the period of investigation. Thus, the imports from the subject countries have increased not only in absolute terms but also as a share to total imports into India, market demand and domestic production.
58. It has been submitted that the landed value from the subject countries has further come down during the period of investigation as compared to previous two years from already a lower level of landed value whereas the domestic industry was under consistent pressure and could not increase its selling prices. The domestic selling prices have in fact come down over the injury investigation period causing injury to the domestic industry.
59. The share of the domestic industry has increased over the injury investigation period on account of the fact that the demand has increased by 73% over the same period. The market share of the domestic sales also increased as a result of imposition of duties against Indonesia, Korea, Malaysia and Taiwan in a previous investigation. However, it may be noted that as against a total increase of 73% in demand, the share of the domestic sales could increase only 7% clearly depicting that the volume of the domestic sales have been affected.
60. The capacity utilization of the domestic industry has increased from 83% in the year April 04-March 05 to 96% during the period of investigation. The analysis of the capacity utilization in the present case would not provide sufficient information about the impact of injury to the domestic industry. The capacity for

the subject goods is dependent upon various factors. For example, the high denier would result into higher production as compared to lower denier.

61. The productivity per employee during the period of investigation has improved as compared to base year 2004-05.

62. The domestic sales have increased over the injury investigation period as a result of decline in volume of the subject countries in the previous investigation and increase in demand. However, the sales realization of the domestic industry has not improved and has come down over the injury investigation period due to the presence of dumped imports from subject countries.

63. There is no adverse effect on the number of employees and the wages paid to them.

64. Dumping by the subject countries had a significant adverse impact on the net sales realization of the domestic industry for the subject goods. It has been submitted that due to the large scale price undercutting adopted by the exporters from subject countries, the domestic industry was not able to get any price increase over the injury investigation period. Therefore, the profitability of the domestic industry remained negative throughout the investigation period.

65. It has been submitted that as a result of decline in selling prices of the domestic industry, the DI could not earn desirable returns on its investment.

66. The inventories of the domestic industry have increased clearly showing the difficulty being faced by the domestic industry to sell the subject goods during the period of investigation.

67. It may be noted that the landed value of the product under consideration from each subject country is much lower than the prices the domestic industry ought to have realized on the sales of the subject goods. The injurious effect of this high level of price underselling has had a direct and deleterious effect on the financial performance of the domestic industry.

68. The injury to the domestic industry due to the dumped imports is further accentuated by the fact that not only the subject goods are being heavily undersold, the exporters from the subject countries are also indulging in significant price undercutting. Thus, there is a constant pressure on the domestic industry to bring down their prices lower than even the current prices, which are not at all remunerative.

69. It has been submitted that the cash profit of the domestic industry was at a meagre level of ***% during the period of investigation clearly showing an injury to the domestic industry.

70. It has been submitted that the demand in the country has increased by 73% during the period of investigation as compared to base year 2004-05 whereas the market share of the domestic sales has increased only 8.72% over the same period.

71. The ability of the domestic industry to raise capital investment for any further expansion of capacity is not feasible in view of the low returns during the period of investigation.

72. In addition to the fact that material injury is being caused to the Domestic Industry, the threat of material injury to the Domestic Industry is imminent.

73. The imports from the subject countries have shown a significant increase during the period of investigation as compared to the preceding period. The imports have gone up from 1610 MT in April 2004-March 2005 to 39137 MT during the POI. Imports from the subject countries are coming at extremely low prices which do not allow the domestic industry to even recover its cost. The domestic industry is operating at a loss due to current severe undercutting by the subject countries despite suppressed prices of domestic industry. It is becoming very difficult for the petitioners to operate at present and the survival of the domestic industry is equally becoming difficult. Therefore, an immediate action to curb the present dumping from the subject countries would be in the interest of domestic industry.

74. The Domestic Industry also understands that there are huge disposable capacities and surplus production in the subject countries, which is likely to find its way into the Indian market if anti-dumping duties are not immediately imposed. With respect to exporters' inventories, The DI could not find any evidence for the same.

Concerning Causal link it has been submitted:

75. The imports of subject goods from sources other than China, Indonesia, Korea, Thailand and Vietnam are *de minimis* during the period of investigation. The imports from Indonesia and Korea are subject to anti-dumping duty. Therefore, only the imports from the subject countries are being made at dumped prices and are above the *de minimis* limits causing material injury to the domestic industry. The imports from all other countries are below *de minimis*. The demand in the period of investigation has increased over the injury investigation period. Hence, the decline in demand is not a cause of injury to the domestic industry. There is a single market for the subject goods where dumped imports compete directly with the goods produced by the domestic industry. The price determines the choice of supplier. The dumped goods are substituting the product of the indigenous producers. The imported product is also sold to meet the similar commercial grades, standards and specifications, as domestically produced subject goods. The imported goods and the domestically produced

goods are like articles and are used for the same applications/end uses. Thus, pricing becomes the most important factor for purchasing the article either from imported sources or domestic sources. The domestic industry is not realizing reasonable selling price / profit with respect to subject products. This can be directly attributed to the low priced imports from the subject countries as the domestic industry is always expected to match the prices offered by the importers from the subject countries. It may also be mentioned that there are no trade restrictive practices or technology issues which can be attributed to the cause of injury to the domestic industry. The productivity of the domestic industry has also gone up and, therefore, has not caused any injurious effect on the financial state of the domestic industry. As regards the competition between the foreign and domestic producers, it has been submitted that the domestic industry is suffering only on account of unfair trade due to dumped imports from the subject countries. If the imports take place at the fair normal prices, the domestic industry is totally in a position to face the competition from imports. It may be noted that the export sales volume are very little as compared to the domestic sales. Hence, the export performance of the domestic industry in no way has affected the financial and economic situation of the petitioner in the domestic market. In any case, the injury analysis reflected in the preceding section does not include the export sales.

Retrospective Application of Anti-dumping Duties

76. The product under consideration is not only being dumped by the subject countries in the present case but has also been dumped by the subject countries in the previous investigation. The subject goods have been continuously dumped for the past 3-4 years. The domestic industry, therefore, requests the Authority to kindly impose the provisional anti-dumping duties retrospectively at the earliest. In this connection, the attention of Authority has been drawn to the section 9A (3) of the Custom Tariff Act and Rule 20 of the Indian Anti-dumping Rules read with section 9A (2) and Rule 13 providing for the imposition of retrospective duties and the circumstances under which retrospective duties can be imposed. The section 9A (3) and Rule 20 (b) read as under

"9A(3). If the Central Government, in respect of the dumped article under inquiry, is of the opinion that -

(i) there is a history of dumping which caused injury or that the importer was, or should have been, aware that the exporter practices dumping and that such dumping would cause injury; and

(ii) the injury is caused by massive dumping of an article imported in a relatively short time which in the light of the timing and the volume of imported article dumped and other circumstances is likely to seriously under-mine the remedial effect of the anti-dumping duty liable to be levied,

the Central Government may, by notification in the Official Gazette, levy anti-dumping duty retrospectively from a date prior to the date of imposition of anti-dumping duty under sub-section (2) but not beyond ninety days from the date of notification under that

sub-section, and notwithstanding anything contained in any law for the time being in force, such duty shall be payable at such rate and from such date as may be specified in the notification.

Rule 20(2)(b), in the circumstances referred to in sub-section (3) of section 9A of the Act, the anti-dumping duty may be levied retrospectively from the date commencing ninety days prior to the imposition of such provisional duty:

Provided that no duty shall be levied retrospectively on imports entered for home consumption before initiation of the investigation:

Provided further that in the cases of violation of price undertaking referred to in sub-rule (6) of rule 15, no duty shall be levied retrospectively on the imports which have entered for home consumption before the violation of the terms of such undertaking."

77. It is clear from the above that for retrospective imposition of anti-dumping duties, there is a history of dumping which caused injury to the domestic industry. In the instant case also, there is a history of dumping and the injury to the domestic industry has been caused. The Designated Authority has also concluded in the previous investigation that the dumping and injury has been caused to the domestic industry. It can be seen that the imports from subject countries have gone up significantly from 1610 MT to 39137 MT since 2004-2005. At the same time, the imports (in % terms) have almost doubled in the POI as compared to the immediately preceding year. It is significant to note that the imports have gone up significantly in absolute as well as relative terms subsequent to the imposition of anti-dumping duties on certain countries clearly indicating that the injury is caused by massive dumping in a relatively short time. In the present case also the imports from China, Thailand and Vietnam account for 89.64% of the total imports in the period of investigation rising from 4.83% in the base year as can be seen from the table given below:

G.2 View of Other Interested parties

G.3 M/s Jiangsu Hengli chemical Ltd., China

78. It has been submitted that in the present investigation the alleged dumped imports from subject countries have not gained market share at the expense of the market share of the Domestic Industry. Whatever market share has been gained by the imports from subject countries is only by shifting of imports from non subject countries to subject countries. Rather the Domestic Industry has gained market share by about 17% during the period of investigation as compared to the base year. The Domestic Industry is operating at its optimum capacity utilization and is not in a position to further increase its production. Under these circumstances it is imperative for the user industry to import the subject material to bridge the gap between demand and supply. It has further been submitted that Sales of Domestic Industry has increased absolute as well as percentage of demand; Profitability has improved. Losses have come down; Output has increased with increase in production and capacity utilization;

the Domestic Industry has gained mark share by 17%; productivity has improved. There is no sign of deterioration; Return on investment has improved during the period of investigation as compared in the base year; Installed capacity as well as capacity utilization have both increased; margin of dumping claimed is hypothetical and not based on the information submitted by the cooperating exporters. This need be examined critically by DGAD; Domestic Industry has not indicated any figures about cash flow. Still with improvement in financial performance the cash flow is bound to improve; Domestic Industry could sell more than what it produced during the period of investigation. Hence inventories shown as on account of opening stock.; No accumulation of inventories out of production during period of investigation; Number of employees have increased directly in proportion to increase in production. There is no negative effect on employment; Wages have increased corresponding to increase in work force. No adverse effect on wages paid; There is no negative effect on growth. The Domestic Industry has grown more than other producers in India as well as compared to the total imports; Domestic Industry could raise capital easily that's why they could enhance installed capacity by more than 131%; the Domestic Industry has made huge investments in the product. There is no negative effect on investments.

G.4 M/s Indopoly (Thailand) Ltd.

79. It has been submitted that there is no injury on account of imports as the market share of the imports has in fact come down both in absolute as well as in relative terms when compared to the total demand. While imports have fallen during POI the demand from domestic market in India as substantially increased over the period 2004-05 to the POI. The output and the capacity utilization as admitted by Domestic Industry are not cause of injury. Not only output but also sale of the output has increased during the period of analysis.. As regards the contention of the Domestic Industry that despite increase in volumes the sales realization of the Domestic Industry has not improved and has come down over the injury investigation period it has been submitted that keeping in view the increased capacity utilization, increased production and increased sales the sales realization is less due to increase in competition between the players in the domestic industry itself. Further, as admitted by the Domestic Industry itself the adverse impact from the imports is on account of imports from China and Vietnam. Therefore, the Thailand imports are not responsible for any loss to the Domestic Industry and Thailand should be excluded from the scope of the investigation. Concerning profitability it has been submitted that in view of the increased production, increased capacity utilization and increased sales, the sales realization by the domestic industry is less due to increase in competition between the players in the domestic industry itself. Thus, no correlation exists between the imports from the subject countries and the low sales realization and consequent impact on profitability of Domestic Industry. The percentage of imports as a part of the market has come down

during the injury period, the loss to the Domestic Industry is on account of domestic competition alone and not on account of the imports.

G.5 Examination by the Authority

80. It has been noted that no interested party has made any submissions concerning retrospective imposition of anti Dumping Duty. The Authority would examine the matter in final findings after taking into account any submission made by interested parties during the course of investigation. Concerning the analysis of injury parameters, the analysis have been made after verification, to the extent necessary, of the data of the domestic industry and after taking into account the arguments of the interested parties.

G.6 Cumulative assessment of injury

81. The Annexure II (iii) of the Anti Dumping Rules requires that where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti dumping investigations, the designated authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that

- I. The imports from individual countries are above de minimis or cumulatively account for more than 7% of imports;
- II. The dumping margin against individual countries are above 2%; and
- III. Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles

82. The Authority notes that the dumped imports are entering the Indian market simultaneously from several countries, including the subject countries. Therefore, the issue of cumulative assessment of the injury caused to the domestic industry due to dumped imports from these sources has been examined with respect to the above parameters and it was observed that:

- i) The margins of dumping of individual products from each of the subject countries are more than the de minimis limit;
- ii) The volume of imports of individual products from each of the subject countries are more than the de minimis;
- iii) The domestic product and product supplied by producers in various countries are like articles;
- iv) Imports from the subject countries are significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market;

83. The Authority holds that cumulative assessment of injury is appropriate in this case since the exports of individual products from the subject countries are

directly competing amongst themselves as well as with the like goods offered by the domestic industry in the Indian market.

84. The principles for determination of injury set out in Annexure-II of the Anti-Dumping Rules lay down that

"A determination of injury shall involve an objective examination of both (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for like article and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products."

85. As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry para (iv) of Annexure-II of the Anti Dumping Rules states:

"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the Industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment wages growth, ability to raise capital investments."

G.7 Volume and market share in dumped imports

86. Imports volume from subject countries and other countries has been as under:

	April 04 to March 05	April 05 to March 06	April 06 to March 07	POI-Oct 06 to Sep 07
Imports from Subject Countries (MT)	1610	13252	31397	39137
Total Imports (MT)	33368	33438	56953	43659
% Share	4.83%	39.63%	55.13%	89.64%

87. The data shows that share of imports from the subject countries has increased from 4.83% in April 04-March 05 to 89.64% during the period of investigation. It has also been seen that during the POI, imports from the subject countries have increased to almost 24 times of the imports for the year April 04-March 05. During the same period imports from other countries declined from 31757 MT to 4522 MT in POI i.e. 14.23% from base year indicating that imports from subject countries have captured share of imports from other countries after imposition of anti dumping duty on some countries.

G.8 Market share in demand

88. The demand has been calculated by addition of sales of Domestic Industry, other producers (estimate provided by DI) and imports from all countries. The data shows that the demand has increased by 74% in POI from base year. In quantitative terms the demand has increased by 81033 MT. The share of domestic industry has increased from 32.78% in base year to 51.6% in POI. In quantitative terms, the DI and other producers have increased the sale by 70742 MT against increase in demand of 81033 MT. The subject countries have increased share in demand from 1.5% in base year to 20.5% in POI where as share of other countries declined from 29% to 2.37% in the same period. The share of total imports in demand has declined from 30.4% to 22.88%.

89. The demand has also been calculated by taking into account the captive consumption and exports. The share in demand of DI, other producers, imports from subject countries, imports from other countries and total imports shows similar trends.

	April 04 to March 05	April 05 to March 06	April 06 to March 07	POI-Oct 06 to Sep 07
Demand				
Sales of domestic industry	36043	43161	78940	98366
Trend	100	120	219	273
Sales of other producers	40355	41569	48647	48774
Trend	100	103	124	150
Total Import	33368	33438	56953	43659
Total Demand	109765	118434	184541	190798
Trend	100	108	168	174
Market Share In Demand				
Sales of domestic Industry	32.78	36.48	42.70	51.44
Sales of other producers	36.7	35.2	26.4	25.6
Subject countries	1.46	11.19	16.98	20.47
Other countries	28.88	17.08	13.85	2.37
Total Imports	30.40	28.30	30.86	22.88

90. Imports from the subject countries in comparison to the total demand in India have increased from 1.46% during April 04-March 05 to 20.47 % during the period of investigation.

Imports in relation to production of the domestic industry

	April 04 to March 05	April 05 to March 06	April 06 to March 07	POI-Oct 06 to Sep 07
Imports from Subject Countries (MT)	1610	13252	31397	39137
Production (MT)	37227	51928	84406	99479
% Share	4.33%	25.52%	37.20%	39.34%

91. The data shows that imports as percentage of production of domestic industry has increased from 4.33% in the base year to 39.34% in the POI.

92. The data shows that the imports from the subject countries have increased not only in absolute terms but also as a share to total imports into India, market demand and domestic production.

G.9 Capacity, production & capacity utilization

93. Capacity, Production and Capacity Utilization of the domestic industry is given in the following table:

	April 04 to March 05	April 05 to March 06	April 06 to March 07	POI-Oct 06 to Sep 07
Capacity (MT)	44869	55194	95290	102695
Trend	100	123	212	229
Production (MT)	37227	51928	84403	99479
Trend	100	139	227	267
Capacity Utilization%	82.97%	94.08%	88.57%	96.87%

94. The capacity of the domestic industry has increased from 44869 MT in 2004-05 to 102695 MT in the POI i.e. increased by 57826 MT(129%). The production during the same period increased from 37227 MT to 99479 MT i.e. by 62252 MT (167%). The capacity utilization (enhanced) increased from 82.97% in base year to 96.87% in the POI. It has been explained the capacity would change depending upon the change in composition of the product. The capacity for the subject goods is dependent upon various factors. For example, the high

denier would result into higher production as compared to lower denier. Therefore the capacity utilization may not be correct indication of unutilized capacity of the domestic industry.

G.10 Sales

95. Sales Volume of the domestic industry is given in the following table:

	April 04 to March 05	April 05 to March 06	April 06 to March 07	POI-Oct 06 to Sep 07
Sales of domestic Industry (MT)	36043	43161	78940	98365
Trend	100	120	219	273
Sales of other producers (MT)	40355	41569	48647	48774
Trend	100	103	121	121

96. The data shows that sales of domestic industry has increase from base year to POI by 62322 MT and other producers by 8420MT as against the increase in demand by 81033 MT. The sales of domestic industry (including captive consumption and export) increased by 71094 MT and other producers by 8420 MT against demand increase of 83163 MT.

97. The profitability, profits and cash flow of the domestic industry are given in the following table:-

	April 04 to March 05	April 05 to March 06	April 06 to March 07	POI-Oct 06 to Sep 07
Cost of sales	***	***	***	***
Cost Rs/kg	***	***	***	***
Trend	100	90	98	93
Net Sales Realisation(in lacs)	***	***	***	***
NSR Rs/kg	***	***	***	***

Trend	100	96.50	99	95
Profit/ loss in Rs/ kg	***	***	***	***
Trend	-100	82	-65	-32
Profit/Loss	***	***	***	***
PBIT	***	***	***	***
Trend	-100	5331	7	36
Cash profit	***	***	***	***
Trend	100	620	238	454

98. The data of the domestic industry shows that the cost of sale per unit has declined to 93 (indexed) in POI as compared to 100 of base year. In terms of value the cost of sale declined by Rs. 6.34 per kg. During the same period the net sales of realization of the domestic industry declined to 95 (indexed) in POI as compared to 100 of the base year. In terms of value the sale price declined by Rs.4.14 per kg. The loss per kg. has declined from -100 (indexed) in the base year to -32 in the POI.

99. The data indicates that except in 2005-06 the losses continued, however the losses declined from base year to POI.

100. The data on profits show that the losses continued from base year to POI except in 2005-06, however, the losses declined from base year to POI. The PBIT from -100 (indexed) in the base year become 36 in the POI.

G.11 Cash Flow

101. Authority notes that both the constituents of the domestic industry are multi products, multi-location companies. None of the companies maintain separate Information regarding cash flow of the product under consideration. Authority, therefore, determined cash profit situation of the domestic industry, which shows that cash profit continuously improved from base year to POI. In indexed form, from 100 in base year it became 454 in POI.

G.12 Factors affecting domestic prices

102. During the injury period the basic custom duty declined from 20% in 2004-05 to 10% in 2006-07 and 7.5% from March 07 onwards in the POI. The cost of sale from base year in 2004-2005 declined by Rs. 6.34 /kg in POI. The landed value from subject countries though, increased in 2005-06 and 2006-07. However it declined sharply in the POI. The undercutting of selling prices of the domestic industry by imports from subject countries were significant during injury period.

G.13 Price Undercutting

103. The impact on the prices of the domestic industry on account of imports from the subject countries have been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis, weighted average Net Sales Realisation(NSR) and the Non-Injurious Price(NIP) of the domestic industry (worked out on the basis of the costing information of the domestic industry) have been compared with landed value of imports from the subject countries.

104. A comparison for subject goods during the period of investigation was made between the weighted average landed value of dumped imports and the domestic selling price in the domestic market. In determining the net sales realization of the domestic industry, taxes, the rebates, discounts and commission offered by the domestic industry have been adjusted.

105. It has been noted that the price undercutting by imports from subject countries continued through out the injury period. During the POI the undercutting from subject country was in the range of 10-25%.

Price Undercutting**Subject Countries**

	April 04 to March 05	April 05 to March 06	April 06 to March 07	POI-Oct 06 to Sep 07
Average Net selling price of the domestic industry	***	***	***	***
Landed Value	57133	65414	66986	60959
Undercutting	***	***	***	***
Undercutting in %	***	***	***	***

	Subject countries	China	Thailand	Vietnam
Average Net selling price of the domestic industry	***	***	***	***
Landed Value	60960	60320	64530	71890
Extent of Undercutting	***	***	***	***
% of Undercutting	***	***	***	***

G.14 Price Underselling

106. Authority notes that the price underselling is an important indicator of assessment of injury. Non injurious price has been worked out and compared with the landed value of the subject goods to arrive at the extent of price underselling. The non-injurious price has been evaluated for the domestic producers by appropriately considering the cost of production for the product under consideration during the POI. The analysis shows that the landed values of subject goods from subject countries were much below the non-injurious price determined for the domestic industry during the period of investigation. The underselling margin was within a range of 15-30% for subject goods from subject countries during the POI.

Price Underselling

	Subject countries	China PR	Thailand	Vietnam
NIP	***	***	***	***
Landed Value	60960	60320	64530	71890
Underselling	***	***	***	***
% of Underselling	***	***	***	***

G.15 Return on capital employed

107. The Information regarding return on capital employed is given in the table below:

	April 04 to March 05	April 05 to March 06	April 06 to March 07	POI-Oct 06 to Sep 07
Net Fixed Assets Rs. Lacs	***	***	***	***
Working Capital Rs. Lacs	***	***	***	***
Capital Employed Rs. Lacs	***	***	***	***
Indexed	100	181	255	235
PBIT Rs. Lacs	***	***	***	***
Return on Capital Employed – NFA %	***	***	***	***
Indexed	-100	296	15	81

108. The data shows that the capital employed has increased by 135 % in POI as compared to base year. The capital employed has increased on account of capacity addition and increase in working capital. The return on capital employed improved from base year to POI. The return on capital employed (NFA basis) was negative in base year, turned positive in 2005-06 and continue positive thereafter, however the return on capital employed declined in 2006-07 in POI.

G.16 Employment and Wages

109. Employment & Wages levels of the domestic industry is given in the following table:

	April 04 to March 05	April 05 to March 06	April 06 to March 07	POI-Oct 06 to Sep 07
No of Employees	***	***	***	***
Index	100	119	187	197
Wages Total (Rs. Lacs)	***	***	***	***
Index	100	109	140	168

110. The data shows that number of employees increased by 97% in POI as compared to base year. The wages to employees increased by 68% during the same period.

G.17 Productivity

111. Productivity of the domestic industry, as reflected in terms of production per employee, is given in the following table

	April 04 to March 05	April 05 to March 06	April 06 to March 07	POI-Oct 06 to Sep 07
Production(MT)	37227	51928	84406	99727
Employees	***	***	***	***
Production Employee	***	***	***	***
Index	100	118	122	136

112. The productivity of the domestic industry i.e. production per employee improved by 36% during POI as compared to base year.

G.18 Growth

113. The demand, capacity, production and sales show positive growth. The cost of sale and selling price shows declining trend. The profitability (loss per unit) PBIT and return on capital employed shows positive growth.

Inventory

114. The inventories of the domestic industry have increased clearly showing the difficulty being faced by the domestic industry to sell the subject goods during the period of investigation.

	April 04 to March 05	April 05 to March 06	April 06 to March 07	POI-Oct 06 to Sep 07
Inventories Average Stock (MT)	***	***	***	***
Trend	100	64	154	307
Sales per day Avg stock in terms sales days	***	***	***	***
	15	8	11	17

G.19 Ability to raise capital/investment

115. That the ability of the domestic industry to raise capital investment for any further expansion of capacity is not feasible in view of the low returns during the period of investigation

G.20 Conclusion

116. The production of goods have increased by 167%(62252 MT) in POI as compared to base year. The sales have also increased by 173% (62322 MT) against increase in demand of 173% (81033 MT). The sales of other producers (the estimate provided by DI) have also increased. The average inventory of stock in terms of sale deals increased from 15 days in base year to 17 days in POI. In this period the share in demand of the domestic industry has increased from 32.78% to 51.6% in POI. The share of subject countries increased from 1.46% to 20.47% in POI, however share of imports from other countries declined sharply from 28.93% to 2.37%. Consequently the share of total imports fell from 30.40% to 22.88% in POI. The data indicates that the domestic industry has been able to take advantage of increase in demand by increasing the sales, production, capacity utilization and share in demand.

117. The cost of sales has declined from 100(indexed) in the base year to 93 in POI i.e. by Rs. 6.34 per kg., the selling price however declined to 95 (indexed) i.e. by Rs.4.14 per kg. the domestic industry was suffering loss (per unit) in the base year and continued to suffer loss during the injury period except in 2005-06 when there was a profit. The loss per unit in POI declined to -32 (indexed) from -100 in the base year. The PBIT however turned positive from 2005-06 onwards. The return on capital employed also turned positive in 2005-06,

however it declined sharply in 2006-07 and improved slightly in POI. The ROI however remained low.

G.21 Causal Link and Other Factors

I. Volume and Prices of imports not sold at the dumped prices

118. The imports of subject goods from sources other than China, Indonesia, Korea, Thailand and Vietnam are *de minimis* during the period of investigation. The imports from Indonesia and Korea are subject to anti-dumping duty. Therefore, only the imports from the subject countries are being made at dumped prices and are above the *de minimis* limits causing material injury to the domestic industry.

II. Trade restrictive practice and competition between the foreign and domestic producers

119. The Authority did not find any trade restrictive practices followed by the domestic industry or other Indian producers.

III. Contraction in demand or Changes in the pattern of consumption

120. It is noted that there is no contraction in the demand during the period under consideration. On the contrary, the overall demand has increased by 74% over the injury period. Therefore, possible decline in demand is not a factor which could have caused injury to the domestic industry.

IV. Developments in Technology, Export performance and productivity of the Domestic Industry

121. None of the interested parties have raised any issue that these factors could have caused injury to the domestic industry. Further, the investigation has not revealed that technology for production of the subject goods has undergone any significant change. Domestic industry does not have significant exports. The export performance of the domestic industry however increased 2006-07 and POI.

G.22 Causal Link

122. On the subject goods Anti Dumping Duty was imposed in 2006 on imports from Indonesia, Korea ROK, Malaysia and Chinese Tapei. After imposition of Anti Dumping Duty on these countries, the imports declined significantly, however the imports from other countries increased substantially. In POI the subject countries have captured 89.64% share in the total imports. The undercutting by imports from subject countries continued in the range of 10-25%

and underselling in the range of 15-30% indicating that the selling price of the domestic industry continued to be under pressure by dumped imports from subject countries. Consequently the improvement in 2005-06 in profitability and profits did not sustain and performance started declining in 2006-07 and POI. As compared to base year the profits (PBIT) improved, however return on capital employed after turning positive in 2005-06 started declining. The return on capital employed remained low.

123. The domestic industry continue to gain share in market by increasing its production, sale and capacity utilization, however the improvement in volume after imposition of Anti Dumping Duty on some countries did not result in improving the financial performance. The losses per unit except in 2005-06 continued. Similarly ROI also remain low except in 2005-06 when it showed improvement.

124. The above analysis indicate that imports from subject countries continued to put pressure on performance of domestic industry by undercutting its selling price indicating the casual link between dumped imports and performance of the domestic industry.

H. Conclusions

125. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

- a. The subject goods have been exported to India from the subject countries below its normal value;
- b. The domestic industry has suffered material injury;
- c. The injury has been caused by the dumped imports from subject countries.

I. Indian Industry's Interest & Other Issues

126. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

J. Recommendations

127. In view of the above, the Authority considers it necessary and recommends provisional anti-dumping duty on imports of subject goods from the subject country in the form and manner described hereunder.

128. Having regard to the lesser duty rule followed by the authority, the Authority recommends imposition of provisional anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, provisional antidumping duty equal to the amount indicated in Col 9 of the table below is recommended to be imposed from

the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on all imports of subject goods originating in or exported from the subject countries.

Duty Table

SN	Tariff Item	Description of Goods	Specification	Country of origin	Country of Export	Producer	Exporter	Duty Amount	Unit of Measurement	Currency
1	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1	5402.47	All Fully Drawn or Fully Oriented Yarn/Spin Draw Yarn/Flat Yarn of Polyester (non-textured and non-POY) and other yarns		China PR	China PR	TONGKUN GROUP CO.LTD.	TONGKUN GROUP CO.LTD.	200.53	MT	USD
2	-do-	-do-		China PR	China PR	TONGKUN GROUP HENGSHENG CHEMICAL FIBRE CO.LTD	TONGKUN GROUP HENGSHENG CHEMICAL FIBRE CO.LTD	225.52	MT	USD
3	-do-	-do-		China PR	China PR	WUXI GODSHEEP INDUSTRY & TRADE CO.LTD.	Jiangsu Godsheep Chemical Fiber Co. Ltd.	275.42	MT	USD
4	-do-	-do-		China PR	China PR	JIANGSU HENGLI CHEMICALS FIBRE CO.LTD	JIANGSU HENGLI CHEMICALS FIBRE CO.LTD	112.64	MT	USD
5	-do-	-do-		China PR	China PR	Any combination other than at Sr. no. 1 to 4 above		527.31		MT
6	-do-	-do-		China PR	Any other than China PR	Any	Any	527.31	MT	USD
7	-do-	-do-		Any other than subject countries	China PR	Any	Any	527.31	MT	USD
8	-do-	-do-		Vietnam	Vietnam	Any	Any	232.66	MT	USD
9	-do-	-do-		Vietnam	Any other than Vietnam	Any	Any	232.66	MT	USD
10	-do-	-do-		Any other than subject countries	Vietnam	Any	Any	232.66	MT	USD
11	-do-	-do-		Thailand	Thailand	INDO POLY (THAILAND) LTD.	INDO POLY (THAILAND) LTD.	283.21	MT	USD

12	-do-	-do-		Thailand	Thailand	Any combination other than at Sr. no. 11 above.		379.74	MT	USD
13	-do-	-do-		Thailand	Any other than Thailand	Any	Any	379.74	MT	USD
14	-do-	-do-		Any other than subject countries	Thailand	Any	Any	379.74	MT	USD

K. FURTHER PROCEDURE

129. The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings:-

- (a) The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final findings;
- (b) Exporters, importers, domestic industry and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days from the date of publication of preliminary findings. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings;
- (c) The Authority would conduct further verification to the extent deemed necessary;
- (d) The Authority would disclose essential facts before announcing the final findings.

R. GOPALAN, Designated Authority